ऋग्वेद । यजुर्वेद । सामवेद । अथर्ववेद

ओ३म्

पवमान

(संयुक्तांक)

मूल्य: ₹ 20

वर्ष : 33 पौष-फाल्गुन वि0स0 2077 अंक : 1-2 जनवरी-फरवरी 2021

मुद्रक: सरस्वती प्रेस, देहरादून वजन: 50 ग्राम

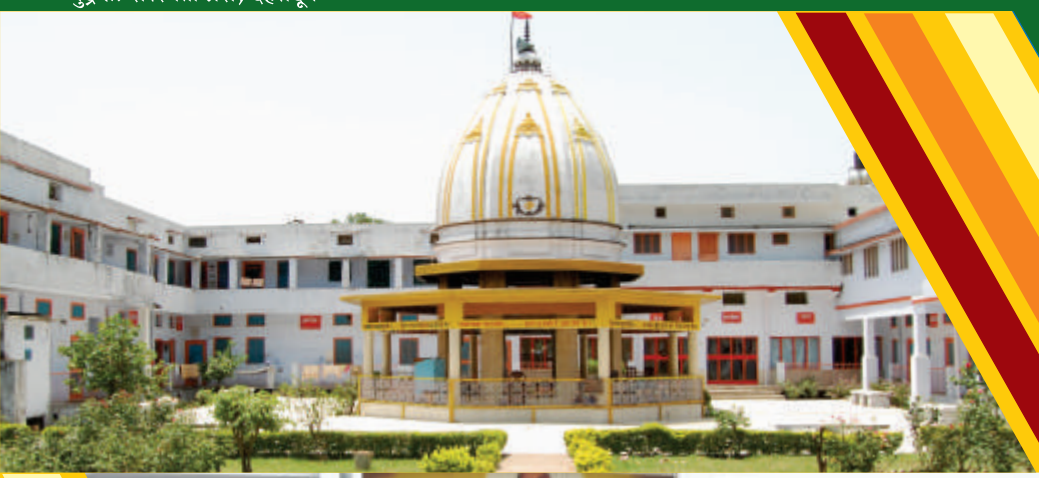

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून-248008

पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है।

श्रद्धांजलि

स्व. माता सन्तोष रहेजा जी

माता सन्तोष रहेजा जी आज हमारे बीच में नहीं रही। उनके दिनांक 8 नवम्बर 2020 को आकस्मिक निधन से वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के सभी आश्रमवासियों को बहुत दुःख हुआ। माता जी छः वर्षों तक तपोवन सोसाइटी की उपाध्यक्ष रही और उनके मार्गदर्शन में आश्रम ने चहुमुंखी उन्नति की। माता जी आश्रम के उत्सवों में बहुत उत्साह के साथ सम्मिलित होकर महिला सम्मेलन का आयोजन करवाती थी। वह तन मन धन से तपोवन आश्रम से जुड़ी हुई थी। आतिथ्य सत्कार उनमें कूट–कूट कर भरा था। जब भी कोई व्यक्ति उनके दर्शन के लिये अनके तपोवन स्थित आवास पर आता था तो वह उसे जलपान या भोजन के बिना नहीं जाने देती थी। आज माता जी हमारे बीच नही हैं लेकिन उनकी स्मृति बहुत लम्बे समय तक हमें प्रेरणा देती रहेंगी। मैं तपोवन आश्रम सोसाइटी के सदस्यों तथा समस्त आश्रमवासियों की ओर से माता सन्तोष रहेजा जी को श्रद्धाजंलि अर्पित करता हूँ और परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि पूज्य माता सन्तोष रहेजा जी की दिवगंत आत्मा को अपनी न्याय व्यवस्था के अनुसार मोक्ष गामी बनाये और परिवार जनों को इस गहन दुःख को सहने की शक्ति दें। ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

दर्शन कुमार अग्निहोत्री
अध्यक्ष

प्रेम प्रकाश शर्मा
सचिव

ओ३म्

पवमान

वर्ष–33 अंक–1–2 (संयुक्तांक)

पौष–फाल्गुन 2077 विक्रमी जनवरी–फरवरी 2021

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,120 दयानन्दाब्द : 196

★

–: संरक्षक :–

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती

मो. : 9410102568

★

–: अध्यक्ष :–

श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री

मो. : 09810033799

★

–: सचिव :–

प्रेम प्रकाश शर्मा

मो. : 9412051586

★

–: आद्य सम्पादक :–

स्व0 श्री देवदत्त बाली

★

–: मुख्य सम्पादक :–

डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

अवैतनिक

मो. : 9336225967

★

–: सम्पादक मण्डल :–

अवैतनिक

आचार्य आशीष दर्शनाचार्य

मनमोहन कुमार आर्य–

मो. : 9412985121

★

–: कार्यालय :–

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,

तपोवन मार्ग, देहरादून–248008

दूरभाष : 0135–2787001

मोबाईल : 7895978734 (श्री चन्दन सिंह)

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com

Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	2
वेदामृत	आचार्य डॉ० रामनाथ वेदालंकार	3
वैदिक धर्म के कुछ मुख्य सिद्धान्त	मनमोहन कुमार आर्य	4
मकर संक्रान्ति पर्व का महत्व	मनमोहन कुमार आर्य	7
धर्म की वेदी पर शहीद अमर हुतात्मा धर्मवीर हकीकत राय		10
वसन्त पंचमी पर्व का स्वरूप एवं इसकी महत्ता	मनमोहन कुमार आर्य	11
ऋषिभक्त दानवीर महाशय धर्मपाल जी को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि		13
राम सीता मिलाप में हनुमान की भूमिका	ईश्वरी प्रसाद प्रेम जी	14
लौकिक अन्ध मान्यताओं के कुछ प्रकार व समाधान	पं. उम्मेद सिंह विषारद	17
आयुर्वेदिक चिकित्सा	डॉ. वैद्य भगवान दास	20
आर्य समाज के तीन स्कन्ध	आर्य रविन्द्र कुमार जी	22
योग साधना एवं चतुर्वेद परायण यज्ञ की सूचना	वैदिक साधन आश्रम तपोवन	24
अमृत की एक बूंद से ही हमारी जन्मोजन्म की प्यास...	स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक	25
अनेक रोगों में उपयोगी हैं फल	सुश्री पद्माजी	28
महात्मा जी की अनुभूतियाँ	वीतराग महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज	29

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. "वैदिक साधन आश्रम"	केनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. "पवमान"	केनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
3. 'तपोवन विद्या निकेतन"	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1.	कलर्ड फुल पेज	रु. 5000/– प्रति माह
2.	ब्लैक एण्ड व्हाईट फुल पेज	रु. 2000/– प्रति माह
3.	ब्लैक एण्ड व्हाईट हॉफ पेज	रु. 1000/– प्रति माह

सदस्यों के लिए पवमान पत्रिका के रेट्स

1.	वार्षिक मूल्य (12 प्रतियाँ प्रति वर्ष)	रु. 200/– वार्षिक
2.	15 वर्ष (आजीवन) के लिए मूल्य	रु. 2000/–

नोटः पवमान पत्रिका फुटकर विक्रय के लिए उपलब्ध नहीं है।

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सम्पादकीय

महानता

किसी भी व्यक्ति की महानता को आंकने के लिए प्रत्येक समाज या विचारधारा के अलग–अलग पैमाने होते हैं। इन्हीं के आधार पर अशोक, आदि को महान् कहा गया है। वेदों में महानता के पांच लक्षण बताये गये हैं। प्रथम लक्षण है व्यक्ति का कर्मयोगी होते हुए परमेश्वर, समाज और राष्ट्र के लिए जीवन समर्पित करना। उसका दूसरा लक्षण है कि वह मान–अपमान, लाभ–हानि, आदि की परवाह न करते हुए और सदा आनन्दित रहते हुए अपने कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ता रहता है। वह दूसरों को भी आनन्द प्रदान करता है। उसका तीसरा लक्षण यह है कि वह मननशील, सहनशील और मर्यादा पालक होता है। उसका धर्म मनुष्यता या परोपकारिता होता है। गीता की भाषा में निष्काम कर्म करने वाला अर्थात् अपने लाभ के लिए कर्म न करने वाला व्यक्ति महानता के लक्षण पूरे करता है। चौथा लक्षण यह है कि उसमें क्षुद्रता अर्थात छोटापन नहीं होता है। उसका हृदय विशाल होता है और वह प्रत्येक जीव को समान आदर और प्रेम की दृष्टि से देखता है। महानता का पांचवा लक्षण यह है कि वह स्वयं प्रकाशित होता है और अपने इस प्रकाश से अन्यों को भी प्रकाशित करता है अर्थात् वह ज्ञान और ऊर्जा से परिपूर्ण होता और अन्यों को भी प्रेरित करता है जिससे वे भी अपना अज्ञान मिटाकर कर्मशील होकर ज्ञानमार्ग पर बढ़ सकते हैं। सदैव दूसरों की सहायता करने वाला, विकार रहित, पुरुषार्थयुक्त, उत्तम बल से युक्त, बुद्धिमान, विशेष ज्ञान वाला और बिना किसी स्वार्थ के सेवा में तत्पर रहने आदि गुणों से सुशोभित होना भी महानता के अपूर्व लक्षण हैं। इस सृष्टि को इन विचारकों, मनीषियों, और वैज्ञानिकों आदि ने समस्याओं का समाधान करते हुए समृद्ध बनाया है। अंग्रेजी भाषा में एक कहावत है कि कुछ लोग महान् पैदा होते हैं, कुछ महान् बन जाते हैं और कुछ पर महानता थोप दी जाती है। हमारी संस्कृति के अनुसार महानता किसी पर थोपी नहीं जा सकती है। सतत् साधना करते हुए नर और नारायण की सेवा करके हम महान् बन सकते हैं। हमारी संस्कृति के इतिहास में यह देखा गया हें कि जिस व्यक्ति ने निःस्वार्थ सेवाभाव से अपना जीवन अन्यों की सेवा में अर्पित किया है, उसे लोगों ने महान् व्यक्तियों की श्रेणी में रखा है। कोई भी व्यक्ति स्वयं अपने को महान नहीं कह सकता है। वह तभी महान कहलायेगा, जब समाज के अन्य लोग उसके द्वारा किये गये कृत्यों के आधार पर उसका मूल्यांकन करके उसे महान मानने को तत्पर हो जायें। आर्यसमाज में भी अनेक महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने अपना जीवन समाज और राष्ट्र की सेवा में अर्पित कर दिया। महर्षि दयानन्द सरस्वती उन सब में अग्रणी हैं। महर्षि चाहते तो वह अपने योग बल और साधना से मोक्ष मार्ग की ओर अधिक प्रवृत्त हो सकते थे, परन्तु महर्षि ने निजी साधना लक्ष्य के स्थान पर समाज के कल्याण की भावना की और ध्यान देते हुए अपना जीवन राष्ट्र और समाज के लिये समर्पित कर दिया। महर्षि के जन्म दिवस और बोधोत्सव के अवसर पर महर्षि को नमन करते हुए, यह अंक सुधी पाठकों को समर्पित है।

– डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

ओ३म्

वेदामृत

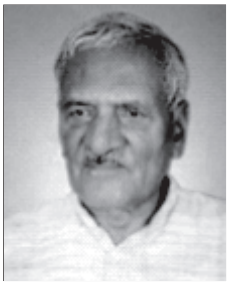

ब्रह्मणस्पति (प्रभु) का परामर्श

प्र नूनं ब्रह्मणस्पतिर्, मन्त्र वदत्युक्थ्यम्।
यस्मिन्निन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा, देवा ओकांसि चक्रिरे।।

ऋग्वेद 1.40.5

ऋषिः कण्वः घौर। देवता ब्रह्मणस्पतिः। छन्दः विराट् पथ्या बृहती।

(ब्रह्मणस्पतिः) वेदज्ञान का अधिपति परमेश्वर तथा विद्वान् मनुष्य (नूनं) निश्चय ही [ऐसे] (उक्थ्यम्) प्रशंसनीय (मन्त्रं) परामर्श को (प्रवदन्ति) प्रकृष्टरूप से कहता है, (यस्मिन्) जिसमें (इन्द्र) इन्द्र, (वरुणः) वरुण, (मित्रः) मित्र [और] (अर्यमा) अर्यमा (देवाः) देव (ओकांसि) घर (चक्रिरे) किये होते हैं।

हे मनुष्य! जब कभी तुझे किसी विषय में परामर्श की आवश्यकता होती है, तब इधर–उधर मारा–मारा क्यों फिरता है? वे लोग जो स्वयं अज्ञानी और अपूर्ण हैं, भला तुझे क्या परामर्श देंगे? उनकी सलाह पाकर तो तू पथ–भ्रष्ट ही होगा। अतः कभी तेरे मन में कर्तव्याकर्तव्य का संशय उपस्थित हो, तब वेदज्ञान के अधिपति ब्रह्मणस्पति प्रभु की शरण में जा। अन्तर्मुख होकर सच्चे हृदय से अपनी समस्या उनके सम्मुख रख। वे अवश्य ही तेरे मन में ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न करेंगे और तेरे संशय या भ्रान्ति की सब काली घटाओं को छिन्न–भिन्न कर देंगे। अन्धकार में ज्योति पाने के लिए तू ब्रह्मणस्पति प्रभु के दिये हुए वेदों को भी देख सकता है कि उनमें क्या लिखा है, क्योंकि उनमें दिये हुए परामर्श भी ब्रह्मणस्पति के ही परामर्श हैं। इसके अतिरिक्त वेदों के ज्ञानी, अनुभवी, सदाचारी, मित्रभाव रखने वाले विद्वज्जन भी 'ब्रह्मणस्पति' हैं। यदि परमात्मा की प्रेरणा सुन सकने का सामर्थ्य तुझमें नहीं है, तो तू उन विद्वानों की ही शरण में जा। उनसे अपने संशयों का निवारण करवा।

जो 'ब्रह्मणस्पति' है, उसके 'मन्त्र' या परामर्श में इन्द्र, वरुण, मित्र और अर्यमा देवों का निवास होता है। 'इन्द्र' ऐश्वर्य, उत्कर्ष, पराक्रम, विजय और सफलता को सूचित करता है। 'वरुण' पाप–निवारण का आदर्श है। 'मित्र' मैत्री और स्नेह का प्रतिनिधि है। 'अर्यमा' श्रेष्ठ एवं अश्रेष्ठों के साथ यथा योग्य व्यवहार एवं न्याय का देव है। ब्रह्मणस्पति के परामर्श में इन देवों के निवास का तात्पर्य है कि इन देवों से सूचित होने वाली उक्त विशेषताएं उस परामर्श में निहित रहती हैं। उस परामर्श को पाकर और उनके अनुसार चलकर मनुष्य उत्कर्षवान् और विजयी होता है, पाप से बचता है, अन्य जनों के प्रति मैत्री और न्याय का बर्ताव करता है।

आओ, हम भी संशय की वेला में 'ब्रह्मणस्पति' प्रभु और 'ब्रह्मणस्पति' विद्वान् को ही अपना अन्तरंग बनाएं, उसी से पूछें, उसी से प्रेरित हों और उसी के सन्देश का पालन करें।

(सामवेद के संस्कृत–हिन्दी भाष्यकार एवं अनेक वैदिक ग्रन्थों के लेखक आचार्य डॉ0 रामनाथ वेदालंकार की पुस्तक वेद–मंजरी से साभार प्रस्तुत)

– आचार्य डा. रामनाथ वेदालंकार

ओ३म्

वैदिक धर्म के कुछ मुख्य सिद्धान्त

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

वैदिक धर्म विश्व का सबसे प्राचीन धर्म व मत है। वैदिक धर्म का प्रचलन वेदों से हुआ। वेद सृष्टि के आरम्भ में अन्य सांसारिक पदार्थों की ही तरह ईश्वर से उत्पन्न हुए। परमात्मा सत्य, चित्त व आनन्द स्वरूप है। ईश्वर के इस स्वरूप को सच्चिदानन्दस्वरूप कहा जाता है। चेतन पदार्थ ज्ञान व क्रिया से युक्त होते हैं। ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप सहित सर्वव्यापक, अनादि, नित्य, अमर तथा अविनाशी सत्ता है। ईश्वर सर्वज्ञ है जिसको सृष्टि बनाने व पालन करने का ज्ञान अनादि काल से है। यह ज्ञान न घटता है न बढ़ता है। पूर्ण ज्ञान में घटना व बढ़ना नहीं होता। मनुष्य एकदेशी, ससीम तथा जन्म व मरण धर्मा होने से अल्पज्ञ है। इसे ज्ञान प्राप्ति में ईश्वर सहित वेदज्ञान व माता, पिता एवं आचार्यों की आवश्यकता होती है। इनके बिना हम ज्ञानवान तथा सत्य व यथार्थ तथ्यों व प्रकृति के रहस्यों को जानने वाले नहीं होते। वेद ज्ञान की सहायता तथा ईश्वर की उपासना से मनुष्य ज्ञानवान होता है। मनुष्य को ज्ञानवान बनाने में माता, पिता, आचार्यों तथा ऋषियों के सत्य ज्ञान से युक्त ग्रन्थों का विशेष महत्व होता है। इन ग्रन्थों का अध्ययन कर मनुष्य अपनी बुद्धि से सत्यासत्य का निर्णय कर सकता है। संसार में ईश्वर व ऋषियों के अतिरिक्त मनुष्यों द्वारा रचित अनेक ग्रन्थ उपलब्ध हैं। मनुष्य के अल्पज्ञ होने से उसकी सभी रचनायें निर्दोष नहीं होती हैं। बड़े बड़े महापुरुष भी अल्पज्ञ होते हैं। इस कारण उनके ग्रन्थों में विद्यमान कुछ मान्यतायें विद्या व ज्ञान की दृष्टि से वेदविरुद्ध होने के कारण सत्य न होकर असत्य वा विष मिश्रित अन्न के समान होती हैं। अतः ईश्वरीय ज्ञान वेदों को स्वतः प्रमाण मानकर हमें अपने जीवन में किसी भी ग्रन्थ की मान्यता की परीक्षा कर उसे स्वीकार व अस्वीकार करना चाहिये और सत्य को ही अपनाना चाहिये। वेद सब सत्य विद्याओं के ग्रन्थ हैं। वेदानुकूल सिद्धान्त व मान्यतायें ही आचरण करने व मानने योग्य होती हैं। सभी प्रचलित मतों की मान्यतायें में एकता व समानता न होने का कारण उनकी मान्यताओं का अविद्यायुक्त होना है। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में वेदों की सत्य मान्यताओं का प्रकाश करने के साथ मत–मतान्तरों की अविद्यायुक्त मान्यताओं का दिग्दर्शन कराया है। इससे विदित होता है कि वेद ही स्वतः प्रमाण है जिसकी सभी मान्यतायें ईश्वर प्रदत्त होने से प्रमाण हैं तथा अन्य ग्रन्थों की वही मान्यतायें स्वीकार करने योग्य हैं जो पूर्णतः वेदानुकूल हों।

वैदिक धर्म के मुख्य सिद्धान्तों व मान्यताओं पर विचार करते हैं तो इसका प्रमुख सिद्धान्त त्रैतवाद का सिद्धान्त प्रतीत होता है। त्रैत से अभिप्राय ईश्वर, जीव तथा प्रकृति इन तीन सत्ताओं से है। हमारा यह संसार इन तीन पदार्थों का ही समन्वित रूप है। ईश्वर इन्द्रियों से अगोचर होने के कारण आंखों से दिखाई नहीं देता। उसमें गन्ध न होने से उसे सूंघ कर अनुभव नहीं किया जा सकता तथा वायु के समान न होने के कारण उसका स्पर्श भी नहीं होता। वह एक अनादि, नित्य, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, धार्मिक स्वभाव से युक्त, दयालु, कृपालु, जीवों के प्रति पितृ, मातृ, बन्धु, सखा आदि सम्बन्धों से युक्त सत्ता है। ऋषि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि–

भाष्यभूमिका, आर्याभिविनय तथा ऋग्वेद–यजुर्वेद भाष्य का अध्ययन कर ईश्वर के सत्यस्वरूप को जाना जा सकता है। सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी होने से वह हमारे बाहर व भीतर विद्यमान है। वह हमें सत्प्रेरणायें करता रहता है। निर्दोष अन्तःकरण वाले मनुष्यों को उसकी प्रेरणाओं की अनुभूति आनन्द व उत्साह तथा बुरे काम करने पर भय, शंका व लज्जा के रूप में अनुभव होती है। हर निर्मित पदार्थ के निमित्त व उपादान कारण होते हैं। इस समस्त सृष्टि व इसके समस्त पदार्थों का एक ईश्वर ही निमित्त कारण है तथा अनादि व नित्य सूक्ष्म प्रकृति उपादान कारण है। ईश्वर व प्रकृति से इतर चेतन जीवों का भी संसार में अनादि काल से अस्तित्व है। यह सब नाशरहित अजर व अमर पदार्थ हैं। जीव अल्पज्ञ एवं जन्म व मरण धर्मा हैं। इन्हीं के लिये परमात्मा इस सृष्टि को बनाते व पालन करते हैं। जीव अल्पज्ञ चेतन सत्ता है। अतः यह मनुष्य आदि योनियों में जन्म प्राप्त कर कर्म करते हैं जिसका जन्म–जन्मान्तर में फल भोगने के लिये इनका नाना योनियों में जन्म होता है। इसी से पुनर्जन्म का सिद्धान्त भी सिद्ध होता है। मनुष्य व अन्य सभी योनियों में जीवों की उत्पत्ति व जन्म का कारण उसके पूर्वजन्म के कर्म ही सिद्ध होते हैं। जीव अनादि व अनन्तकाल तक विद्यमान रहने से युक्त स्वरूप वाले हैं। इनके कर्मों व अस्तित्व का कभी अन्त नहीं होगा। अतः इनके जन्म अनन्त काल तक होते रहेंगे। संसार में ईश्वर, जीव व प्रकृति का अस्तित्व सत्य सिद्ध है। कोई मत व सम्प्रदाय इन वैदिक मान्यताओं को मानता है तो अच्छी बात है और यदि कोई अज्ञानतावश किसी सत्य वैदिक सिद्धान्त को नहीं मानता तो इसका कारण उनका अज्ञान वा अविद्या ही कहा जा सकता है।

वेद जीवों के जन्म का कारण उसके कर्म बन्धन को बताते हैं। जब यह बन्धन क्षीण हो जाते हैं तो जीवात्मा का मोक्ष हो जाता है। मोक्ष आवागमन वा जन्म व मरण से दीर्घावधि के लिये मुक्ति को कहते हैं। मोक्ष में जीवन को पूर्ण सुख व आनन्द प्राप्त होता है। यह उसके शुभ कर्मों व साधना का पुरस्कार व प्रतिफल होता है। इसका विस्तार ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ में देखा जा सकता है। मोक्ष एक सत्य सिद्धान्त है। इसकी पुष्टि सत्यार्थ प्रकाश के नौवें समुल्लास में प्रस्तुत तथ्यों व तर्कों के आधार पर होती है। सत्य प्रेमी व जिज्ञासु बन्धओं को सत्यार्थ प्रकाश का मोक्ष विषयक प्रकरण अवश्य पढ़ना चाहिये।

वेदों का एक प्रमुख सिद्धान्त पुनर्जन्म की मान्यता है। आत्मा जन्म व मरण धर्मा है। इसका इसके कर्मों के अनुसार जन्म व शरीर के जर्जरित होने पर मरण होता रहता है। मृत्यु के बाद जन्म होना सुनिश्चित होता है। गीता नामक ग्रन्थ में कहा है कि जन्म लेने वाले प्राणी की मृत्यु निश्चित होती है। इसी प्रकार मृत्यु को प्राप्त आत्मा का जन्म होना भी ध्रुव अर्थात् निश्चित है। हम संसार में भिन्न भिन्न गुण, कर्म व स्वभाव वाले शिशुओं के जन्म को देखकर व उनकी पृथक पृथक भिन्न क्रियाओं को देखकर उनके पूर्वजन्म के संस्कारों का अनुभव करते हैं। शिशु माता का दुग्ध पीता है। इसका कारण भी उसका पूर्वजन्म का संस्कार होता है। इसी प्रकार से नवजात व अल्प आयु के शिशुओं का हंसना व रोना तथा एक ही परिवार में समान पोषण मिलने पर एक का बुद्धिमान तथा किसी का अल्प बुद्धि वाला होना, किसी का धार्मिक प्रकृति का तथा किसी का धर्म विपरीत आचरण की प्रकृति का होना मनुष्य के पुनर्जन्म को सिद्ध करते हैं। पुनर्जन्म पर ऋषि दयानन्द के अनेक तर्कपूर्ण वचन भी उपलब्ध हैं। अनेक विद्वानों ने भी पुनर्जन्म पर उत्तम ग्रन्थों की रचना की है। कुछ विद्वानों ने पुनर्जन्म पर शोध उपाधि पीएचडी आदि भी प्राप्त की हैं। इन सबसे पुनर्जन्म का सिद्धान्त सत्य सिद्धान्त सिद्ध होता है।

वेद व वैदिक साहित्य में हमें पंचमहायज्ञों को प्रतिदिन करने का एक तर्कसंगत एवं लाभकारी सिद्धान्त भी प्राप्त होता है। यह पांच कर्तव्य हैं 1– ईश्वरोपासना वा सन्ध्या, 2– देवयज्ञ अग्निहोत्र,

3– पितृयज्ञ, 4– अतिथियज्ञ एवं 5– बलिवैश्वदेव यज्ञ। सन्ध्या ईश्वर की प्रातः व सायं उपासना को कहते हैं। इस उपासना के समर्थन में भी ऋषि दयानन्द के अनेक तर्कपूर्ण एवं सारगर्भित कथन उपलब्ध हैं। उनके अनुसार ईश्वर के सभी जीवों पर अनादि काल से अनन्त उपकार हैं। ईश्वर ने हम जीवों के लिये ही इस सृष्टि का निर्माण किया तथा हमें मनुष्य का जन्म दिया है। अनादि काल से हम जन्म लेते आ रहे हैं। बार बार हमारा पुनर्जन्म ईश्वर की कृपा से ही होता है। हमें जो सुख प्राप्त होते हैं उसका आधार व दाता भी परमेश्वर ही है। अतः हमें ईश्वर के उपकारों के लिए कृतज्ञता प्रकट करने के लिये उसकी उपासना अवश्य करनी चाहिये। उपासना से जीवात्मा की उन्नति होती है। मनुष्य को सुख प्राप्त होने सहित उसका परजन्म भी सुधरता है। ऐसे अनेक लाभ ईश्वर की उपासना से होते हैं। मनुष्य का दूसरा प्रमुख कर्तव्य देवयज्ञ अग्निहोत्र है। इससे वायु शुद्धि सहित रोग कीटाणुओं का नाश होने से मनुष्य स्वस्थ रहते हैं। कुछ रोग दूर भी होते हैं। यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है। इसको करने से मनुष्य को पुण्य का लाभ होता है जिससे हमें जन्म जन्मान्तर मे सुख मिलता है। मनुष्य को पितृयज्ञ के अर्न्तगत माता, पिता तथा वृद्धों की सेवा सुश्रुशा करनी होती है। अतिथि यज्ञ में विद्वान निःस्वार्थ स्वभाव के अतिथियों का आदर सत्कार व पोषण करना होता है। बलिवैश्वदेव यज्ञ में मनुष्येतर प्राणियों के प्रति प्रेम व सद्भाव रखते हुए उन्हें यथाशक्ति भोजन कराना होता है। पंच महायज्ञों का विधान होने से भी वैदिकधर्म संसार का महानतम धर्म व संस्कृति है। इसके पालन से ही मनुष्य का वर्तमान, भविष्य तथा पर जन्म सुधरता है। ईश्वर की कृपा व सहाय प्राप्त होता है। आत्मा की उन्नति सहित सुख व मोक्ष में भी यह पंचमहायज्ञ कारण व सहायक होते हैं।

वैदिक धर्म में गुण, कर्म व स्वभाव के आधार पर वर्णव्यवस्था का विधान है। वर्तमान में प्रचलित जन्मना जाति व्यवस्था का समर्थन वेद व ऋषियों के साहित्य से नहीं होता। यह व्यवस्था मध्यकाल में अज्ञानता के कारण प्रचलित हुई थी। इसका कोई उचित कारण व महत्व नहीं है। इससे मनुष्य के बीच भेदभाव व पक्षपात होता है। वेद मनुष्यों में पक्षपात के सर्वथा विरुद्ध हैं। वेद तो मनुष्य मात्र को वेदों का ज्ञानी, विद्वान व विदुषी बनने बनाने की प्रेरणा करते हैं। वेदों का अध्ययन कर सभी स्त्रियां व पुरुष योग्यता को प्राप्त कर ऋषि, ऋषिकायें, यज्ञ के ब्रह्मा, पुरोहित, वेदों के प्रचारक तथा आत्म व ईश्वर साक्षात्कार करने वाले योगी बन सकते हैं। वेद विद्या पढ़कर पूर्ण युवावस्था में युवक व युवती के विवाह के समर्थक हैं। वेदों से बाल विवाह का समर्थन न होकर निषेध होता है। विधवाओं के प्रति भी वेदों व वैदिक साहित्य में कोई पक्षपात से युक्त वचन व मान्यता नहीं है। वेदों व वैदिक साहित्य में शूद्रों को भी द्विजों के साथ मिलकर उनके कार्यों में सहयोग करने के विचार प्राप्त होते हैं। वृद्ध शूद्र को भी सभी का पूज्य माना जाता है। शूद्रों की गणना भी वैदिक मान्यता के अनुसार आर्यों में होती है। आर्य श्रेष्ठ गुण, कर्म व स्वभाव से युक्त मनुष्य को कहा जाता है।

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेदों में मनुष्य के सभी कर्तव्य व कर्मों का विधान किया गया है। वेद ईश्वर से उत्पन्न होने से एकमात्र सबके लिये मान्य धर्मग्रन्थ हैं। वेदों की आज्ञाओं का पालन करना सभी मनुष्यों का कर्तव्य धर्म है। जो मनुष्य इसको मानेगा उसका जन्म जन्मान्तर में परमात्मा कल्याण करेंगे। सभी मनुष्यों को वेदों का अध्ययन कर परम धर्म वेद का पालन करना चाहिये। वेदों से दूर होकर हम अज्ञानता व अन्धविश्वासों को प्राप्त होते हैं। वैदिक कर्तव्यों की पूर्ति से हमें सुख प्राप्त होता है व परजन्म में उन्नति होती है, वेदों से दूर रहने पर उससे हम वंचित हो जाते हैं। हमने इस लेख में कुछ वैदिक मान्यताओं की संक्षेप में चर्चा की है। यदि यह लेख किसी को प्रिय लगता है तो इसमें हमारे श्रम की सार्थकता है।

ओ३म् शम्।

ओ३म्

मकर संक्रान्ति पर्व का महत्व

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

मनुष्य सभी आवश्यक विषयों का ज्ञान प्राप्त करना चाहता है। जो ज्ञान उसे अधिक महत्वपूर्ण लगता है उसे स्मरण रखते हुए उससे लाभ प्राप्त करने में उसी प्रवृत्ति बनती है। हमारे अनेक पर्व हमें उनके महत्व से परिचित कराते हैं जिन्हें मनाकर हम उससे यथोचित लाभ लेने का प्रयास करते हैं। मकर संक्रान्ति का पर्व भी ऐसा ही एक पर्व है जिसके यथार्थस्वरूप से परिचित होकर हमें ज्ञात होता है कि इस पर्व से ''उत्तरायण'' 6 माह के काल का आरम्भ होता है। इससे हमारे दिन के समय में वृद्धि और रात्रि के अन्धकार की अवधि में निरन्तर कमी आती जाती है। महाभारत के दिनों में उत्तरायण में ही हमारे क्षत्रिय व अन्य लोग अपने प्राण त्यागने को महत्वपूर्ण मानते थे। अजेय योद्धा भीष्म पितामह के जीवन का उदाहरण है कि जब उनका समस्त शरीर अर्जुन के बाणों से बिंध गया था और उनकी मृत्यु निकट ही थी, तब उन्होंने अपने ब्रह्मचर्य व तप के बल से अपने प्राणों व आत्मा की ऊर्ध्व गति के लिए उत्तरायण के आगमन तक रोक रखा था। इसका कारण यही था कि उत्तरायण में प्राण त्यागने पर मनुष्य की उत्तम गति व मोक्ष प्राप्ति की सम्भावना होती है। उत्तरायण के प्रथम दिन मकर संक्रान्ति का यह पर्व अज्ञात दीर्घ अवधि से मनाया जा रहा है। इससे हमें आकाश में होने वाली ज्योतिषीय घटना का ज्ञान भी होता है। यदि यह पर्व न मनाया जाता होता तो जन सामान्य मकर संक्रान्ति की घटना से शायद परिचित न होता। अतः मकर संक्रान्ति मनाते हुए हमें मकर राशि और सूर्य के उसमें प्रविष्ट होने सहित इस पर्व से दिन के समय में वृद्धि व रात्रि के समय में कमी होने की वास्तविकता को समझना चाहिये। इसका हमारे जीवन में महत्व होता है। यदि मकर संक्रान्ति के

दिन व इसके बाद भी रात्रि के समय में वृद्धि व दिन के समय में कमी का क्रम पूर्ववत् जारी रहता तो इससे मनुष्य जीवन के अस्तित्व में बाधायें व समस्यायें आतीं। अतः इस लाभकारी परिवर्तन के दिन को हमें प्रसन्नतापूर्वक ज्ञान से पूर्ण परम्परा को अपनी भावनाओं में स्थिर कर मनाना चाहिये। इस लेख में हम मकर संक्रान्ति विषयक जानकारी प्रस्तुत कर रहे हैं।

हमारी पृथ्वी सूर्य के चारों ओर भ्रमण करते हुए परिक्रमा करती है। इसी से रात्रि, दिन, सप्ताह, महीने व वर्ष होते हैं। पृथ्वी को सूर्य की एक परिक्रमा व चक्र पूरा करने में एक वर्ष का समय लगता है। इसे सौर वर्ष कहा जाता है। हमारी पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा एक वर्तुलाकार परिधि में करती है। इससे जो वृत्त बनता है उसे 'क्रान्तिवृत्त' कहते हैं। हमारे ज्योतिष के विद्वानों ने इस क्रान्तिवृत्त पर 12 भाग कल्पित किये हुए हैं। इन 12 भागों के नाम उन्होंने आकाशीय नक्षत्र पुंजों की कुछ पशुओं से मिलती जुलती आकृतियों के अनुरूप, जिन्हें राशियां कहते हैं, दिये हैं। यह आकृतियां हैं 1. मेष, 2. वृष, 3. मिथुन, 4. कर्क,

5. सिंह, 6. कन्या, 7. तुला, 8. वृश्चिक, 9. धनु, 10. मकर, 11. कुम्भ तथा 12. मीन। इन आकृतियों के समान नक्षत्र पुंजों की आकृतियां होने के कारण ही इन राशियों को यह नाम दिये गये हैं। सूर्य का भ्रमण व परिक्रमा करते हुए जब पृथ्वी एक राशि से दूसरी राशि में प्रविष्ट होती है तो उसे 'संक्रान्ति' नाम से सम्बोधित किया जाता है। संसार में पृथ्वी के एक राशि से दूसरी राशि में संचरण व प्रविष्ट होने को सूर्य का संक्रमण कहने लगे हैं। 6 माह तक सूर्य क्रान्तिवृत्त के उत्तर में उदय होता है और 6 माह तक क्रान्तिवृत्त के दक्षिण भाग में। इस प्रत्येक 6 मास की अवधि का नाम अयन कहलाता है। सूर्य के उत्तर की ओर उदय की अवधि को 'उत्तरायण' और दक्षिण दिशा की ओर उदय की अवधि को 'दक्षिणायन' कहते हैं। उत्तरायण काल में सूर्य उत्तर की ओर से निकलता हुआ दीखता है। उत्तरायण की अवधि में दिन का समय निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होता जाता है और रात्रि का समय दिन प्रति दिन कम होता जाता है।

दक्षिणायन काल में सूर्य दक्षिण की ओर से उदय होता हुआ दिखाई देता है। इसमें रात्रि का समय बढ़ता और दिन का समय घटता जाता है। दक्षिणायण काल में सूर्य जब मकर राशि में प्रवेश करता है तो इसे उत्तरायन और जब कर्क राशि में संक्रान्ति करता है तो उसे दक्षिणायन के नाम से जाना जाता है। उत्तरायण में सूर्य का प्रकाश हमारी पृथ्वी पर अधिक मात्रा में प्राप्त होने से इससे अनेक प्रकार से लाभ होते हैं जिससे इसका महत्व दक्षिणायन से अधिक है। उत्तरायण का आरम्भ मकर संक्रान्ति के दिन से होने से इस दिन को महत्वपूर्ण मानकर पर्व मानने की परम्परा प्राचीन काल से चल रही है। मकर संक्रान्ति के दिन से ही इसके बाद के दिन बड़े होने आरम्भ होते थे परन्तु आजकल इस दिन से लगभग 22 दिन पहले ही दिन बड़े होने लगते हैं। अब से 83 वर्ष पूर्व विक्रमी सम्वत् 1994 में पाया गया था कि मकर संक्रान्ति से 22 दिन पूर्व धनु राशि के 7 अंश 24 कला पर 'उत्तरायण' होता है। इस परिवर्तन को 1350 वर्ष लगे हैं। ऐसा होने पर भी मकर संक्रान्ति के दिन ही उत्तरायण को आरम्भ मान लिया जाता है। इसका कारण प्राचीन काल से मनायी जाने वाली इस उत्तरायण पर्व प्रथा को सुरक्षित रखना प्रतीत होता है। इससे हमें यह ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में हमारे पूर्वज मकर संक्रान्ति के दिन उत्तरायण का पर्व मनाते थे और उत्तरायण उसी दिन होता भी था। उत्तरायण पर्व अथवा मकर संक्रान्ति पर्व को मनाने का यही कारण है।

मकर संक्रान्ति का पर्व मध्य जनवरी मास में मनाया जाता है। इस अवसर पर शीत अपने यौवन पर होता है। इस समय जंगल, वन, पर्वत सहित नगरों व ग्रामों आदि सभी स्थानों में शीत का आतंक छाया हुआ होता है। ऐसे समय में मनुष्य के हाथ पैर भी सिकुड़ जाते हैं। मकर संक्रान्ति से पूर्व दिनों की यह स्थिति होती है कि सूर्य के उदय होते ही वह अस्तांचल के गमन की तैयारियां आरम्भ कर देते हैं। ऐसा लगता था कि दिन रात्रि में समा रहा है। रात्रि इतनी लम्बी हो जाती है कि कठिनाई से बीतती है। मकर संक्रान्ति के आने पर रात्रि के वृद्धि अभियान पर विराम लगता है और इसके बाद से वह छोटी होती जाती है व दिन बड़े होने लगते हैं। दिन के समय में वृद्धि होने से मकर संक्रान्ति के दिवस से आरम्भ उत्तरायण काल को देवयान कहा गया है। इसी काल में महाभारत काल व उसके बाद के ज्ञानी लोग स्वशरीर त्याग की इच्छा करते थे। वह ऐसा मानते थे कि इस समय देह त्यागने से उन की आत्मा सूर्य लोक में होकर प्रकाश मार्ग से प्रयाण करेगी। आजीवन ब्रह्मचारी भीष्म पितामह ने इसी उत्तरायण के आगमन तक शर–शयया पर शयन करते हुए प्राणोत्क्रमण की प्रतीक्षा की थी। ऐसे प्रशस्त समय पर कोई पर्व बनने से कैसे वंचित रह सकता था। इसी कारण से आर्य जाति के प्राचीन आचार्यों ने मकर संक्रान्ति, सूर्य की उत्तरायण संक्रमण की तिथि, को उत्तरायण या मकर संक्रान्ति पर्व निर्धारित

किया था।

इस पर्व को मनाते हुए तिल के अनेक प्रकार के पकवान बनाकर उनका सेवन किया जाता है। वैद्यों के अनुसार शीत का निवारण करने में खाद्य पदार्थों में तिल का विशेष स्थान है। मकर संक्रान्ति के दिन भारत के सब प्रान्तों में तिल और गुड़ या खांड के लड्डू बनाकर दान किये जाते हैं। इन लड्डुओं को इष्ट मित्रों में भी बांटा जाता है। महाराष्ट्र में इस दिन तिलों का 'तीलगूल'' नामक हलुवा बांटने की प्रथा है। सौभाग्यवती स्त्रियाँ तथा कन्याएं अपनी सखी–सहेलियों से मिलकर उन को हल्दी, रोली, तिल और गुड़ भेंट करती हैं। प्राचीन ग्रीक लोग भी वधू–वर को सन्तान वृद्धि के निमित्त तिलों का पकवान बांटते थे। इससे ज्ञात होता है कि तिलों का प्रयोग प्राचीनकाल में विशेष गुणकारक माना जाता रहा है। प्राचीन रोमन लोगों में मकर संक्रान्ति के दिन अंजीर, खजूर ओर शहद अपने इष्ट मित्रों को भेंट देने की रीति थी। यह भी मकर संक्रान्ति पर्व की वैश्विकता एवं प्राचीनता का परिचायक है।

मकर संक्रान्ति वैदिक व आर्य पर्व है। इससे हमारी प्राचीन संस्कृति में पर्वों को प्राकृतिक, ज्योतिषीय व ऋतु परिवर्तन आदि धटनाओं से जोड़कर मानने की परम्परा का ज्ञान होता है। आज भी मकर संक्रान्ति का मनाना प्रासंगिक है। हमें ज्ञात होता है कि अब रात्रि छोटी व दिन बड़े होने आरम्भ हो जायेंगे। शीत का जो आतंक होता है वह भी मकर संक्रान्ति पर्व से निरन्तर घटता जाता है और फाल्गुन के महीने में शीण व समाप्त सा हो जाता है। चैत्र का महीनों तो अत्यन्त सुहावना होता है। इस महीने में होली का पर्व मनाया जाता है। हमें मकर संक्रान्ति पर्व पर अपने घरों में वृहद यज्ञ करने चाहिये और उसमें हवन सामग्री में तिल मिलाकर उससे आहुतियां देनी चाहियें। तिल के सभी प्रकार के पकवान बनाकर उसका कुछ दिनों तक सेवन करना चाहिये। वेद प्रचार प्रसार से जुड़ी गुरुकुल जैसी संस्थाओं को दान देना चाहिये। आर्यसमाजों व सार्वजनिक स्थानों पर पर्व मनाने के लिये सामूहिक कार्यक्रम भी आयोजित किये जा सकते हैं। ऐसा करके हम मकर संक्रान्ति पर्व की परम्परा को जारी रखने में सफल होंगे। यह प्रथा चलती रहे, लोग इसके विभिन्न पहुलुओं से परिचित होते रहें तथा तिल आदि के पकवानों का सेवन कर शीतकाल में शीत से उत्पन्न रोगों से बचे रहें, यही इस पर्व को मनाने की उपयोगिता है। हमने इस लेख की सामग्री श्री पं. भवानी प्रसाद लिखित आर्य पर्व पद्धति पुस्तक से ली है।

आर्यसमाज के वैदिक विद्वान्

1. श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय, दिल्ली	9868536762	12. डॉ० वीरपाल वेदालंकार, गाजियाबाद	9811294382
2. श्री महावीर मुमुक्षु, मुरादाबाद	9837372207	13. डॉ० महावीर मीमांसक, दिल्ली	9811960640
3. डॉ० सोमदेव शास्त्री, मुम्बई	9869162041	14. रामचन्द्र शर्मा, बिजनौर	9412568601
4. आचार्य भगवान देव, दिल्ली	9250906201	15. डॉ० लक्ष्मण कुमार शास्त्री, दिल्ली	9891706264
5. आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, दिल्ली	9810084806	16. श्री महेन्द्रपाल आर्य, दिल्ली	9810787056
6. श्री विष्णुमित्र वेदार्थी, नजीबाबाद	9412117965	17. डॉ० सारस्वत मोहन, दिल्ली	9810835335
7. श्री विष्णुदत्त आर्य, गुरुग्राम	9873391975	18. आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक, होशंगाबाद	9424471288
8. डॉ० विनय विद्यालंकार, रामनगर	9412042430	19. आचार्य दर्शनीय लोकेश, नौएडा	9412354036
9. डॉ० महेश कुमार विद्यालंकार, दिल्ली	9810305288	20. श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी, शामली	9411814167
10. पं० वीरेन्द्र शास्त्री, सहारनपुर	9719436141	21. श्री ओमप्रकाश, आबू रोड(राज.)	9414589510
11. श्री सतेन्द्र सिंह आर्य, मेरठ	9897000375	22. सोमपाल शास्त्री, दिल्ली	9313635846

वसन्त पंचमी को दिए बलिदान पर विशेष

धर्म की वेदी पर शहीद अमर हुतात्मा
धर्मवीर हकीकत राय

हकीकत राय (1719–1734), एक साहसी बालक व युवक था जिसने हिन्दू धर्म के अपमान का प्रतिकार किया और अन्यायपूर्वक इस्लाम स्वीकार करने के स्थान पर मृत्यु को गले लगा लिया।

पंजाब के सियालकोट में सन् 1719 में जन्में वीर हकीकत राय जन्म से ही कुशाग्र बुद्धि के बालक थे। कहा जाता है कि इस बालक ने 4–5 वर्ष की आयु में ही इतिहास तथा संस्कृत आदि विषय का पर्याप्त अध्ययन कर लिया था। 10 वर्ष की आयु में फारसी पढ़ने के लिये इन्हें एक मौलवी के पास मस्जिद में भेजा गया। वहॉ के मुसलमान छात्र हिन्दू बालको तथा हिन्दू देवी देवताओं को अपशब्द कहते थे। बालक हकीकत राय उन सब के कुतर्को का प्रतिवाद करते और उन मुस्लिम छात्रों को वाद–विवाद में पराजित कर देते थे। एक दिन मौलवी की अनुपस्थिति में मुस्लिम छात्रों ने हकीकत राय को परेशान किया। बाद में मौलवी के आने पर उन्होने हकीकत की शिकायत कर दी कि इसने बीबी फातिमा को गाली दी है। यह बाद सुन कर मौलवी बहुत नाराज हुए और हकीकत राय को शहर के काजी के सामने प्रस्तुत किया। बालक व उसके परिजनों द्वारा सही बात बताने के बाद भी काजी ने एक न सुनी और निर्णय सुनाया कि शरियत के अनुसार इसके लिये मृत्युदण्ड है। बालक मुसलमान बन जाये तो जीवित बच सकता है। माता पिता व सगे सम्बन्धियों के यह कहने के बाद कि मेरे लाल मुसलमान बन जा, तू कम से कम जिन्दा तो रहेगा। किन्तु बालक हकीकत राय अपने निश्चय पर अडिग रहा और वसन्त पंचमी सन 1734 को जल्लादों ने उसे फॉसी दे दी।

1947 में भारत के विभाजन से पहले, हिन्दू बसंत पंचमी के उत्सव पर लाहौर स्थित उनकी समाधि व स्मारक पर इकट्ठा होते थे। विभाजन के बाद उनकी एक और समाधि होशियारपुर जनपद के ब्योली के बाबा भंडारी में स्थित है। यहाँ लोग बसंत पंचमी के दिन इकट्ठा हो कर हकीकत राय जी को श्रद्धांजलि देते हैं। गुरदासपुर जिले में, हकीकत राय को समर्पित एक मंदिर बटाला में स्थित है। इसी शहर में हकीकत राय की पत्नी सती लक्ष्मी देवी को समर्पित एक समाधि है। हमारा सौभाग्य है कि हमने अपने मित्र श्री राजेन्द्र कुमार एडवोकेट के साथ कादियां में सन् 1997 में आयोजित पं. लेखराम बलिदान शताब्दी समारोह में सम्मिलित होकर लौटते समय इस समाधि व स्मारक के दर्शन किये थे। भारत के कई क्षेत्रों का नाम शहीद हकीकत राय जी के नाम पर रखा गया है जहाँ विभाजन के बाद शरणार्थी आकर बसे। इसका उदाहरण दिल्ली स्थित 'हकीकत नगर' है।

वर्ष 1782 में अग्गर सिंह (अग्र सिंह) नाम के एक कवि ने बालक हकीकत राय की शहादत पर एक पंजाबी लोकगीत लिखा। महाराजा रणजीत सिंह के मन में बालक हकीकत राय के लिए विशेष श्रद्धा थी। बीसवीं सदी के पहले दशक (1905–10) में, तीन बंगाली लेखकों ने निबन्ध के माध्यम से हकीकत राय की शहादत की कथा को लोकप्रिय बनाया। आर्य समाज ने हकीकत राय जी की वैदिक हिन्दू धर्म के प्रति सच्ची गहरी वफादारी पर एक नाटक ''धर्मवीर'' प्रस्तुत किया। इस कथा की मुद्रित प्रतियां निःशुल्क वितरित की गयीं थीं।

ओ३म्

वसन्त पंचमी पर्व का स्वरूप एवं इसकी महत्ता

(श्री पं. भवानी प्रसाद जी के लेख व वचनों पर आधारित)

प्रस्तुतकर्ता : मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

वसन्त ऋतु के समय शीत का आतंक समाप्ति पर होता है। जराजीर्ण शिशिर का बहिष्कार करते हुए सरस वसन्त ने वन और उपवन में ही नहीं, किन्तु वसुधा भर में सर्वत्र अपने आगमन की घोषणा कर दी है। सारी प्रकृति ने वसन्ती बाना पहन लिया है। खेतों में सरसों फूल रही है। जहां तक दृष्टि जाती है मानो पीतता सरिता की तरंगावली नेत्रों का आतिथ्य करती है। वनों में पलाश–पुष्प टेसू की सर्वत्र व्यापिनी रक्ताभा दर्शनीय है। उपवन गेंदे और गुलदाऊदी की पुष्पावली के पीत परिधान धारण किये हुए हैं। नगर और ग्राम में बाल–बच्चे वसन्ती वस्त्रों से सजे हैं। मन्द सुगन्ध मलय समीर सर्वत्र बह रहा है। ऋतुराज वसन्त के इस उदार अवसर पर इतने पुष्प खिलते हैं कि वायु देव को उनकी गन्ध के भार से शनैः–शनैः सरकना पड़ता है। इस समय उपवनों में चारों ओर पुष्पों ही पुष्पों की शोभा नयनों को आनन्द देती है। जिधर देखिये उधर ही रंग–बिरंगे फूल खिल रहे हैं। कहीं गुलाब अपनी बहार दिखा रहा है तो कहीं कुछ पंचरंगे फूल आंखों को लुभा रहे हैं। कहीं सूर्य की प्रिया सूर्यमुखी सूर्य को निहार रही है। कहीं श्वेत कुन्द की कलियां दांत दिखला कर हंस रही हैं। गुले लाल अपने गुलाबी पुष्पों के ओठों से मुस्करा रहा है। कमल अपने पुष्प–नेत्रों से प्रकृति–सौन्दर्य को निहार रहा है। आम्रपुष्पों अर्थात् बौरों की छटा ही कुछ निराली है। उन पर भौरों की गूंज और शाखाओं पर बैठी कोयल की कूक उस की शोभा को द्विगुणित कर देती है। आम के बौरों में कुछ ऐसी मदमाती सुगन्ध होती है कि वह मन को बलात् अपनी ओर खींच कर मोद से भर देती है। आयुर्वेद के सिद्धान्तानुसार इस ऋतु में वनस्पतियों में नवीन रस का संचार ऊपर की ओर को होता है। प्राणियों के शरीरों में भी नवीन रुधिर का प्रादुर्भाव होता है जो उन में उमंग और उल्लास को बढ़ाता है। प्रकृति देवी का यह सारा समारोह ऋतुराज वसन्त के लिए चैत्र के आरम्भ से 40 दिन पूर्व से ही प्रारम्भ हो जाता है। जब प्रकृति देवी ही सर्वतोभावेन ऋतुनायक के स्वागत में तन्मय है तो उसी के पंचभूतों से बना हुआ रसिक शिरोमणि मनुष्य रसवन्त वसन्त के शुभागमन से किस प्रकार बहिर्मुख रह सकता है। फिर वन–उपवन–विहारी भारतवासी तो प्राकृतिक–शोभा निरीक्षण तथा प्रकृति के स्वर में स्वर मिलाने में और भी प्राचीन काल से प्रवीण रहे हैं। वे इस अवसर पर आनन्द

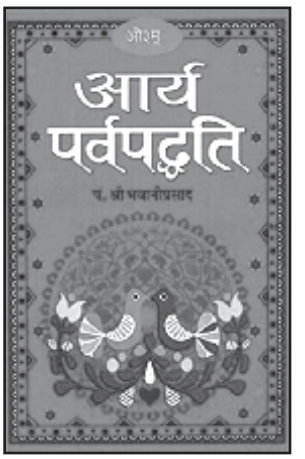

अनुभव से कैसे वंचित रह सकते थे। प्राचीन भारतीयों ने इस उदार ऋतु का आनन्द मनाने के लिए वसन्त पंचमी के पर्व की रचना की।

वसन्त पंचमी के दिवस का समय ही कुछ ऐसा मोदप्रद और मादक होता है कि वायुमण्डल मद और मोद से भर जाता है। दिशाएं कलकण्ठा कोकिला आदि विविध विहंगमों के मधुर आलाप से प्रतिध्वनित हो उठती हैं। क्या पशु, क्या पक्षी और क्या मनुज, सब का हृदय आह्लाद से उद्वेलित होने लगता है। मनों में नयी नयी उमंगे उठने लगती हैं। भारत के अन्नदाता किसान अपने अहर्निश परिश्रम को आसन्न आषाढ़ी उपज सस्य के रूप में सफल देखकर फूले अंग नहीं समाते। उनके गेहूं और जौ के खेतों की नवाविर्भूत बालों से युक्त लहलहाती हरियाली उन की आंखों की तरावट और चित्त को अपूर्व आनन्द देती है। कृषि के सब कार्य इस समय समाप्त हो जाते हैं। अतः कृषि–प्रधान भारत को इस समय आमोद–प्रमोद और राग–रंग की सूझती है। माघ सुदि वसन्त पंचमी के दिन से उस का प्रारम्भ होता है। भारत के ऐश्वर्य–शिखर पर आरूढ़ता और विलास–सम्पन्नता के समय पौराणिक काल में इस अवसर पर मदन–महोत्सव मनाया जाता था। संस्कृत साहित्यज्ञ जानते हैं कि भारतवासी सदा से कविता के वातावरण में विहार करते रहे हैं और कविता प्रतिक्षण कल्पना के वाहन पर विचरती रहती है। इस लिये शायद ही कोई भाव बचा हो, जिसका काल्पनिक चित्र भारतीय कवियों ने न रचा हो।

आर्य पुरुषों को उचित है कि वे कामदाहक वा चरित्रबल के धनी अपने महापुरुषों के उत्तम उदाहरण को सदा अपने सामने रखते हुए मर्यादा अतिक्रमणकारी काम आदि विकारों को किसी ऋतु में भी अपने पास तक न फटकने दें और ऋतुराज वसन्त की शोभा को शुद्धभाव से निरखते हुए और परम प्रभु की रम्य रचना का गुणानुवाद करते हुए वसन्त पंचमी के ऋतुत्सव को पवित्र रूप में मनाकर उस का आनन्द उठावें। वसन्तोत्सव पर भारत में संगीत का ही अधिक प्रचार है। संगीत से बढ़कर मन और आत्मा का आह्लादक दूसरा पदार्थ नहीं है। सद्भाव समन्वित संगीत से आत्मा का अतीव उत्कर्ष होता है। आर्यसमाज ने भव्य–भाव–भरित गानों का प्रचार तो किया है किन्तु उसके गाने प्रायः संगीत विद्या के विरुद्ध बेसुरे और काव्यरस से शून्य पाये जाते हैं। आर्य महाशयों को इस दोष का परिमार्जन शीघ्र करना चाहिये। वसन्त आदि उत्सव संगीत और काव्यकला की उन्नति के लिए उपयुक्त और उत्तम अवसर हो सकते हैं। इन पर्वों पर आर्य जनता में कवितामय सुन्दर संगीत की परिपाटी प्रचलित करनी चाहिए। संगीत का सुधार भी सुधारक शिरोमणि आर्यों से ही सम्भव है।

वसन्त पंचमी के दिन सबको अपने परिवार में यज्ञ करना चाहिये। वसन्त पंचमी के अवसर पर किये जाने वाले यज्ञ से संबंधित मन्त्र आर्य पर्व पद्धति में दिये गये हैं जिनसे विशेष आहुतियां दी जानी चाहियें। वसन्त पंचमी के यज्ञ में केशर युक्त हलवे का ही हुतशेष यज्ञ में समागत सज्जन प्रसादरूप में भोजन करें। वसन्त ऋतु राज के वर्णनपरक किसी कविता का मधुर गान भी किया जाना चाहिये। अपरान्ह समय में सब समूह रूप में सम्मिलित होकर उपवन वा कुसुम उद्यान में भ्रमण करें और वहीं सभा करके वसन्त वर्णनपरक कवितापाठ और गीत का आनन्द उठायें। इसी अवसर पर बालकों की क्रीड़ाओं के प्रदर्शन और फलों के सहभोज का अपनी सुविधा के अनुसार आयोजन किया जाये तो अत्युत्तम है। ऐसा करने से वसन्त उत्सव की उत्कर्ष–वृद्धि हो सकती है।

ओ३म्

ऋषिभक्त दानवीर महाशय धर्मपाल जी को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

महाशियां दि हट्टी अर्थात् एमडीएच मसाले संस्थान के प्रबंध निदेशक व समाज सेवी पद्म भूषण महाशय धर्मपाल जी का गुरुवार दिनांक 3–12–2020 को प्रातः 5.38 बजे निधन हो गया। वह 98 वर्ष के थे। गुरुवार दोपहर दो बजे उनका अंतिम संस्कार वैदिक रीति से किया गया। उनके पुत्र श्री राजीव गुलाटी ने उनका अन्तिम संस्कार सम्पन्न किया।

महाशय धर्मपाल जी को कोरोना संक्रमित होने के बाद करीब एक महीना पहले जनकपुरी स्थित माता चानन देवी अस्पताल में भर्ती कराया गया था। संक्रमण से मुक्त होने के बाद भी वह चिकित्सकों की निगरानी में अस्पताल में ही थे। मंगलवार प्रातः अचानक उनको दिल का दौरा पड़ा और शरीर के अंगों ने काम करना बंद कर दिया। इसके बाद से वह सघन चिकित्सा कक्ष में थे। अस्पताल से करीब नौ बजे उनका पार्थिव शरीर वसंत विहार स्थित आवास पर लाया गया जहां लोगों ने उनके दर्शन कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। पद्म भूषण से सम्मानित महाशय धर्मपाल जी ने कठिन परिस्थितियों में भी कामयाबी का उदाहरण पेश किया और एमडीएच मसाले को 2000 करोड़ रुपये के कारोबार तक पहुंचाया। बताते हैं कि देश के बंटवारे के समय वह पाकिस्तान के सियालकोट से महज 1500 रुपये लेकर दिल्ली आए थे। यहां आते ही गुजर बसर करने की चिन्ता ने उन्हें सताया तो 650 रुपये में एक तांगा खरीदा और नई दिल्ली से कुतुब रोड व पहाड़गंज तक चलाना शुरु किया। बाद में उन्होंने तांगा बेच दिया और अजमल खान रोड पर **'महाशय दी हट्टी'** के नाम से मसाले की दुकान खोल ली। आज पूरे देश में एमडीएच की 22 फैक्ट्रियां हैं।

महाशय धर्मपाल जी के संघर्ष की शुरुआत सियालकोट में ही शुरू हो गई थी। वहां उन्होंने सबसे पहले कपड़ा धोने वाला साबुन बनाया। उसके बाद बढ़ई का काम किया। जब इसमें भी मन नहीं लगा तो कपड़े की दुकान पर नौकरी की। फैक्ट्री में भी काम किया। लेकिन, दिल्ली में मसाले की दुकान उनके लिए भाग्यशाली साबित हुई। उन्होंने वर्ष 1959 में कीर्ति–नगर में पहली फैक्ट्री खोली। उस समय उनके साथ सिर्फ दस लोग थे। उन्होंने गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं किया और घर–घर तक एमडीएच को पहुंचाया। जनकपुरी में माता चानन देवी अस्पताल, माता लीलावंती लेबोरेट्री, एमडीएच न्यूरो साइंस संस्थान नई दिल्ली, महाशय धर्मपाल एमडीएच आरोग्य मंदिर, सेक्ट 76 फरीदाबाद, महाशय संजीव गुलाटी आरोग्य केन्द्र ऋशिकेष, महाशय धर्मपाल हृदय संस्थान, सी–1 जनकपुरी, दिल्ली में स्थित है। दिल्ली के द्वारका में उनका एक स्कूल भी चलता है। समाचार पत्रों में उनकी मृत्यु पर प्रकाशित समाचारों में बताया गया है कि महाशय धर्मपाल जी को खाने–पीने के साथ फोटो खिंचवाने का बहुत शौक था। वह बिना पगड़ी के फोटो नहीं खिंचवाते थे।

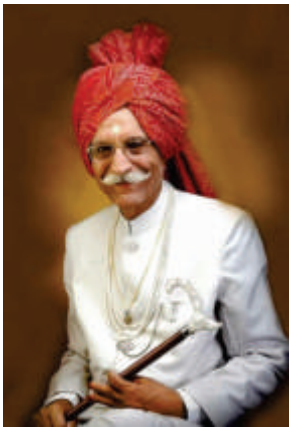

महाशय धर्मपाल जी के निधन से आर्यसमाज तथा इसकी वैदिक धर्म के प्रचार संबंधी गतिविधियों को गहरा धक्का लगा है। इसकी पूर्ति सम्भव नहीं है। वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून के समस्त अधिकारियों की ईश्वर से प्रार्थना है कि वह महाशय जी की पवित्र आत्मा को सद्गति व शान्ति प्रदान करें। आश्रम की ओर से उनको भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित है।

राम सीता मिलाप में हनुमान की भूमिका

ईश्वरी प्रसाद प्रेम जी

रावण–वध और उसके अन्त्येष्टि संस्कार के पश्चात श्री राम ने अपने सबसे बड़े सहायक राष्ट्रोद्धार–व्रती महावीर हनुमान् को बुलाकर आज्ञा दी–''सौम्य! अब और सब काम तो हो गया है परन्तु जिसके लिए सब कुछ हुआ है अब उस सीता को भी सुधि लेनी चाहिए।

अत :

अनुज्ञाप्य महाराजमिमं सौम्य विभीषणम्।
प्रविष्य नगरी लंका कौशलं ब्रूहि मैथिलीम्।

वैदेह्यै मां च कुशलं सुग्रीवं च सलक्ष्णम्।
आचक्ष्व वदतां श्रेश्ठ! रावणं च हतं रणे।

महाराज विभीषण की आज्ञा लेकर लंका में जाओ और जानकी को मेरा कुशल समाचार दो तथा जानकी को मुझे दो। सीता से यह सुखदायक समाचार भी कह देना कि रावण–युद्ध में मारा गया है।''

राम की आज्ञा पाकर हनुमान् लंका में गये और वहाँ से महाराज विभीषण की आज्ञा से सीता देवी के पास जाकर बोलें–

''वैदेही! श्रीराम, सुग्रीव और लक्ष्मण के साथ कुशलपूर्वक हैं और अब वह शत्रुओं को मारकर कृतकार्य हुए हैं।

''देवी! विभीषण, सुग्रीवादि वानर और लक्ष्मण की सहायता से उन्होंने रावण को भी मार दिया है। धर्मज्ञ! यह भारी विजय राम को तुम्हारे ही प्रभाव से हुई है, इसलिए निश्चिन्त होकर पूर्ववत् आनन्दित हो, क्योंकि रावण मारा गया और लंका अपने वश में हो गई।

हनुमान के मुख से इस परमानन्द देने वाले वचन को श्रवण कर सीता आनन्द से कुछ काल तक तो निर्वाक् हो गई फिर बोलीं–

''हनुमान! इस अति प्रिय वचन के सुनाने के बदले में मैं तुमको क्या देकर अनृणी हो सकती हूँ, यह मैं नहीं समझती। यदि सुवर्ण, धन, बहुविधि रत्न वा त्रिलोक का राज्य भी मैं तुम्हें इसके बदले में दे सकूँ तो थोड़ा है।''

हनुमान् ने कहा–''सीते! तुम जैसी पतिव्रताओं से ऐसे ही पति प्रेम की आशा हो सकती है।''

इस पर सीता ने फिर हनुमान् के धर्म, विद्या, बुद्धि और गुणों की प्रशंसा की, तब प्रसन्न होकर हनुमान् बोले –

''देवी! मैंने सुना है, यह राक्षसियाँ तुम्हें बहुत दुःख देती रही हैं। यदि आज्ञा दो तो मैं इन्हें मार दूँ।''

इस बात पर सीता बहुत देर तक विचारती रहीं और फिर बोली, ''वीर! राजा आज्ञा से बलात् किसी काम पर लगाई हुई दासियों पर क्या कोप करना, क्योंकि यह पराधीन थीं, जो तुम मेरे दुःख का विचार करते हो, सो–

भाग्य वैशम्यदोषेण पुरस्ताद् दुष्कृतेन च।
मयैतत्प्राप्ते सर्वं स्वकृतं ह्यप्रभुज्यते।

यह तो मेरे भाग्य के उलटा होने के कारण ही है। किसी पूर्व जन्म के दुष्ट कर्म का फल भोगना आवश्यक है।

सीता के इस कथन को सुनकर हनुमान ने कहा–''क्यों न आपके ऐसे भाव हों, जबकि आप राम की धर्मपत्नी हैं। अब आप कृपा कर कहिए कि आपकी ओर से मैं राम को क्या सन्देश दूँ?

तब सीता ने कहा, मैं केवल भक्तवत्सल अपने पति को देखना चाहती हूँ। सीता के सन्देश को लेकर हनुमान राम के समीप आये और सीता का सन्देश सुनाया। इस पर राम ने विभीषण को वस्त्र–आभूषणों से अलंकृत कर सीता को लाने के लिए कहा।

सीता से कुशल क्षेम पूछने के अनन्तर राम ने अपने और हनुमान, सुग्रीव, विभीषण आदि मित्रों के बल पौरुष तथा विजय का वर्णन किया।

अयोध्या में हनुमान

विभीषण द्वारा दिये गये पुष्पक–विमान पर सीता और लक्ष्मण सहित बैठ कर राम बोले–''महाशय! आप लोगों पर मैं बड़ा प्रसन्न हूँ। अब तुम सब वानर व राक्षस यथेच्छित स्थान पर जाओ। मेरे आत्म–स्वरूप प्रिय महावीर हनुमान! आपके ऋण से तो मैं कभी अनृण हो नहीं सकता, आप धन्य हैं! सुग्रीव जी! आपने मित्रता व धर्मभाव से मेरा बड़ा हित किया है। अब आप किष्किन्धा नगरी को पधारिये और प्रिय विभीषण! तुम मेरे दिये लंका के स्वराज्य में बसो। अब तुम्हें कोई भी भय नहीं दे सकता। अब मैं अयोध्या को जाता हूँ। राम को जाते देखकर हनुमान को आगे कर सबने कहा–

''राजन! हम सब अयोध्या को जाना चाहते हैं। हम शीघ्र ही आपका जन्म देने वाली माता कौशल्या को प्रणाम कर तथा आपका राज्याभिषेक देखकर अपने–अपने स्थान को लौट आयेंगे।''

हनुमान आदि के वचन सुनकर राम बड़े प्रसन्न होकर कहने लगे, ''महानुभाव! यदि ऐसा है, तो बहुत ही अच्छा है। मेरे लिए तो यह अति आनन्द का अवसर होगा, जो आप लोगों के साथ में अयोध्या नगरी का आनन्द उपभोग करूँगा।

पश्चात् पुष्पक–विमान में अपने इन सभी मित्रों और सहायकों सहित श्री राम मार्ग में सीता जी को सागर'–सेतु आदि का परिचय देते हुए तथा किष्किन्धा से पण्डिता तारा, रूमा और तपः–परायणा पद्मरागा आदि को लेकर मुनि भारद्वाज के आश्रम पर आ रूके।

भारद्वाज के आश्रम से दूसरे दिन राम चले, अयोध्या को देख वे बड़े प्रसन्न हुए और हनुमान् को बुलाकर कहा–''वीर! जाकर देखो राजधानी में कुशल तो है? मार्ग में श्रृंगवेरपुर में जाते हुए निषादपति महाराज गुह को मेरा कुशल समाचार देना क्योंकि वह मेरी कुशलता सुन बहुत प्रसन्न होगा। वह मेरा मित्र है। वह तुम्हें अयोध्या का मार्ग बताकर भरत के समाचार भी कहेगा।''

''फिर अयोध्या में जाकर तुम भरत से मेरा, लक्ष्मण और सीता का कुशल समाचार देना तथा सीता–हरण, राक्षस–युद्ध आदि सब कुछ कहना और तुम्हारे कहते हुए जो रूप चेष्टा भरत की हो, वह मुझे बताना।'' (प्रकट है कि हनुमान् इससे पहले भरत से नहीं मिले थे)

पुनः राम का सन्देश लेकर हनुमान् पहले महाराज गुह के पास आये और उसे सन्देश दिया, जिसे सुन वह बड़ा प्रसन्न हुआ तथा स्वागत के लिए बड़ी धूमधाम से प्रजावर्ग को साथ लेकर तैयार हो गया।

वहाँ से वे भरत के पास गये। जाकर देखा कि भरत मुनियों की भाँति जटा बल्कल धारण कर, फल, मूल खाते हुए व्रत पूर्ण कर रहे हैं और राज्याधिकार पाने पर भी बड़े चिन्तायुक्त प्रतीत होते हैं।

तब विरह–व्याकुल भरत को श्रीराम के आने की सूचना देकर उनके प्राण बचाने का काम हनुमान् ने किया। रामचरित मानस का वर्णन है–

राम विरह सागर महँ भरत मगन मन होत।
बिप्र रूप धरि पवनसुत आइ गायउ जनु पोत।।

वहाँ श्री हनुमान् जी भरत की प्रेम–दशा देखकर कहते हैं–

जासु विरहँ सोचहु दिन राती। रटहु निरन्तर गुन गन पाँती।
रघुकुल तिलक सुजन सुखदाता। आयउ कुसल देव मुनि त्राता।।

इस प्रकार श्री राम के आने का कुशल–समाचार सुनते ही श्री भरत जी में नये जीवन का संचार हो आया। उनके पूछने पर अपना परिचय देते हुए हनुमान् कहते हैं–

मारुत सुत मैं कपि हनुमाना। नाम मोर सुनु कृपा निधाना। दीन बन्धु रघुपति कर किंकर।

कितना विनय भाव है! यह बात सुनते ही भरत जी उठकर बड़े हर्श और आदर के साथ उनसे मिले।

सबके लिये सत्यार्थ प्रकाश

पं० वेद प्रकाश शास्त्री

अबालवृद्ध सभी के लिए सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि–

1. यदि किशोर पढ़ेंगे तो उनके जीवन का मार्ग प्रशस्त होगा। उन्हें अपना शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास करने की प्रेरणा मिलेगी।
2. इसे तरुण पढ़ें ताकि इसमें निर्दिष्ट जीवन दिशा के द्वारा अपना भविष्य बना सकें।
3. प्रौढ़जन पढ़ें ताकि जीवन यापन करते समय व्यवहार में हो जाने वाली त्रुटियों तथा दोषों को जानकर अपना सुधार कर सकें।
4. वृद्धजन पढ़ें ताकि वर्तमान जीवन में अपनी बुद्धि, योग्यता और सामर्थ्य के अनुसार अपने किए कर्मों का स्मरण कर आगामी जीवन को उत्तम बनाने का प्रयत्न करें।
5. ब्राह्मण एवं अध्यापक वर्ग पढ़ें ताकि उन्हें सच्ची शिक्षा एवं उपयोगी विद्या के उद्देश्य का ज्ञान हो सके और वे सभी स्त्री–पुरुषों तथा छात्र–छात्राओं को बिना वर्ण, जाति, कुल, ऊँच–नीच आदि भेदभाव के बिना समान रूप से धार्मिक विद्वान् बना सकें।
6. क्षत्रिय, सैनिक, राज्याधिकारी पढ़ें जिससे वे अपने कर्त्तव्यों का बोध प्राप्त कर राष्ट्र की अभिवृद्धि करें। साधुपरित्राण तथा दुष्टों का विनाश कर विश्व में मतविहीन धर्मराज्य की स्थापना कर सकें।
7. विभिन्न मतावलम्बी पढ़ें जिससे वे अपने–अपने मत के दोषों–त्रुटियों का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर सकें।

इस प्रकार सभी पढ़ें ताकि वे समानता, स्वतंत्रता तथा भ्रातृभाव की शिक्षा ग्रहण करके परस्पर मिलकर राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को बनाये रख सकें।

लौकिक अन्ध मान्यताओं के कुछ प्रकार व समाधान

पं0 उम्मेद सिंह विषारद
वैदिक प्रचारक

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सत्यार्थ प्रकाश के अनुभूमिका (1) में लिखते हैं कि जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मत मतान्तर व मान्यताओं का विरुद्धवाद न छूटेगा तब तक अन्यो अन्य को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विशेष विद्वत्जन ईर्ष्या, द्वेष छोड़ सत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहे तो हमारे लिये यह बात असाध्य नही है। इस लेख में समाज में व्याप्त भ्रांतियों का प्रश्नोत्तर रूप में समाधान करने का प्रयास किया गया है।

प्रश्न : क्या जो भी सुख–दुःख वर्तमान जीवन में जीव को प्राप्त होता है, वह सब पूर्व जन्मों के कर्मों का फल होता है?

समाधान : नही। इस जन्म में प्राप्त होने वाले सभी सुख–दुःख मात्र पूर्व जन्मों के कर्मों से सम्बन्ध नही किये जा सकते। वर्तमान जन्मों के कर्मों का परिणाम भी हमें सुख और दुःख के रुप में इसी जन्म में भी मिलता है। आध्यात्मिक आधिदेविक तथा आधिभौतिक सुखों और दुःखों का पूर्वजन्मों के कर्मो के साथ सम्बन्ध नही जोड़ा जा सकता। इस प्रकार हम देखते हैं कि वर्तमान जन्म में बहुत से सुख या दुःख दूसरों के कारण मिलते हैं, जिन्हें ईश्वरीय व्यवस्था में नही माना जा सकता।

प्रश्न : इस जन्म में मिलने वाले सुख–दुःख क्या ईश्वरीय इच्छा से मिलते हैं?

समाधान : नहीं–अगर जीव को मिलने वाले सभी सुख–दुःख पूर्व निश्चित मान मिया जाए तो जीव की कर्म स्वतन्त्रता नष्ट हो जायेगी। अतः इस जीवन में मिलने वाले सभी सुख–दुःखों को मात्र पूर्व जन्मों के कर्मो के आधार पर निश्चित नही माना जा सकता।

प्रश्न : महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा मृत्यु पूर्व शब्दों ''ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो का क्या अर्थ है''?

समाधान : ऋषि की मृत्यु को ईश्वर इच्छा से मानना वेद के सिद्धान्तों व आर्षग्रन्थों की मान्यताओं तथा स्वामी जी द्वारा रचित ग्रन्थों के आधार पर सर्वथा गलत होगा। वस्तुतः परमात्मा की इच्छा क्या है? अतः थोड़े शब्दों में कहें तो परमात्मा की इच्छा है जीवों का कल्याण। स्वामी जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन मानव मात्र की भलाई में लगा दिया और इसी कल्याण की ईश्वरीय इच्छा के पूर्ण होने की प्रार्थना अन्तिम समय में ही कर गये थे। बहुत प्रसन्नता पूर्वक यह शब्द कह गये थे कि हे ईश्वर तेरे द्वारा जो जीवों के कल्याण की इच्छा है वह पूर्ण हो।

प्रश्न : क्या जीव जो कुछ भी करता है वह ईश्वर के ज्ञान में पूर्व निश्चित है?

समाधान : यह सिद्धान्त ठीक नही है। सृष्टि के संचालन में ईश्वर के अपने नियम हैं, उसमें जीव का कोई हस्तक्षेप नही है। जैसे सृष्टि की उत्पत्ति, पालन और विनाश करना। यह सब कार्य ईश्वर के पूर्व निश्चित नियमों के अनुसार ही चलते हैं। इसी प्रकार जीवों के कर्मफल प्रदान करने में भी ईश्वर के सार्वभोम नियम हैं।

प्रश्न : क्या भाग्य को बदला जा सकता है?

समाधान : भाग्य पूर्व निश्चित नही है, पुरुषार्थ कर सदाचार द्वारा अपने सुखों को बढ़ाया जा सकता है। वेद में भी पुरुषार्थ को ही बल दिया है। केवल भाग्य के सहारे रहने वाले व्यक्ति जीवन में

सफल नही होते।

प्रश्न : क्या पति–पत्नी के जोड़े ईश्वर द्वारा पूर्व निश्चित है?

समाधान : नही ऐसा सम्भव नही, यदि ऐसा मानें तो इसमें मानवों की मन–पसन्द जीवन साथी चुनने की कर्म स्वतन्त्रता नष्ट हो जायेगी।

प्रश्न : किसी दुघर्टना में कुछ व्यक्ति मर जाते हैं, कुछ बच जाते हैं। क्या वह बचने वालों की किस्मत नही है, या उनकी आयु शेष बची थी, इसलिए बच गये?

समाधान : उस दुघर्टना में मरने वालों की न तो आयु समाप्त हुई थी और न ही बचने वालों की आयु शेष थी। दुघर्टना में अलग–अलग व्यक्तियों की होने वाला क्षति शारीरिक हानि तथा मृत्यु भी उनकी शारीरिक क्षमता पर निर्भर करती है। हर व्यक्ति को लगने वाली चोट अलग होती है। ईश्वर ने मानव को सौ साल की आयु सामान्यतः दी हुई है। मानव सदाचार, विवेक व पुरुषार्थ व अनुकूल खान–पान द्वारा लम्बी आयु प्राप्त कर सकता है।

प्रश्न : जो मानव वेदानुकूल ईश्वर भक्ति व संस्कारों व मान्यताओं को न मान कर वेद विरुद्ध मान्यताओं के अुनसार चलकर सुख शान्ति की अनुभूति प्राप्त करता है क्या यह गलत है।

समाधान : आत्म–ज्ञान व सुख तो वैदिक मान्यताओं से ही मिलता है। यह अवश्य होता है कि वेद को न मानने वाला कुछ अंशो में सांसारिक झन्झटों, राग द्वेष से तो दूर होता है किन्तु अनार्ष ज्ञान से वह सत्य ईश्वर भक्ति व ईश्वरीय ज्ञान से रहित रहता है और जड़ व चेतन, सत्य–असत्य का भेद न जानकर अपने मन से ही क्षणिक सन्तुष्ट होता है।

प्रश्न : क्या हर व्यक्ति अपनी किस्मत का लिखा कमाता खाता है?

समाधान : नियति वाद का पोषण करने वाली मान्यतायें वैदिक सिद्धान्त पक्ष के विरुद्ध है। यदि पूर्व निश्चित किस्मत का लिखा मान लिया जाये तो मनुष्य को पुरुषार्थ करने की आवश्कता ही नही पड़ेगी। इसलिऐ मनुष्य पुरुषार्थ के द्वारा कार्य सफलता को ही किस्मत कह सकते हैं। अतः पुरुषार्थ ही से जो सुख प्राप्त होता है, वही किस्मत कहलाती है।

प्रश्न : क्या ईश्वर अपने भक्तों की सहायता चमत्कारिक ढंग से करता है और हर संकट व दुःख से निकाल देता है?

समाधान : नहीं ऐसा सम्भव नही है। संकट व दुःख से उत्पन्न होने वाले परिणाम का दोषी मनुष्य स्वयं होता है उसे परमात्मा द्वारा दूर करने का प्रश्न ही नही होता है। अपने द्वारा शुभ व अशुभ कर्मो का फल तो स्वयं को भुगतना ही पड़ेगा, क्योंकि मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है और फल प्राप्त करने में ईश्वरीय व्यवस्था में रहता है।

प्रश्न : क्या नृत्य व भक्ति संगीत आदि द्वारा परमात्मा की स्तुति व प्रार्थना करने से विपदाओं का अन्त हो जाता है?

समाधान : भक्ति संगीत से मन प्रसन्न होता है। किन्तु ईश्वरीय ज्ञान से अधूरा रहता है क्योंकि ऐसा मानना वैदिक सिद्धान्तों के विपरीत है। ध्यानावस्था में चिन्तन से ईश्वर में प्रीति, उसके गुण स्वभाव से अपने गुण कर्म का सुधारना और उपासना से परब्रह्म से मेल और उसका साक्षात्कार होता है।

प्रश्न : क्या ज्योतिष की भविष्यवाणी व मान्यतायें सत्य हैं?

समाधान : फालित ज्योतिष सभी ग्रन्थ व मान्यतायें असत्य हैं और गणित ज्योतिष से सम्बन्ध रखने वाले सूर्य सिद्धान्त आदि ग्रन्थ ठीक हैं। वर्तमान काल में गणित के अंकों का सम्बन्ध मानवों के भविष्य उनके कर्मो तथा कर्मफलों से जोड़ा जाने लगा है, वह असत्य है। गणित ज्योतिष को

भूगोल से सूर्य–चन्द्र आदि से सम्बन्धित ज्ञान–विज्ञान है, वह ही मात्र माननीय है, शेष नही। फालित ज्योतिष भविष्यवाणियां असत्य हैं। क्योंकि ईश्वर द्वारा मनुष्य को कर्म करने की स्वतन्त्रता से अगले क्षण मनुष्य क्या करेगा, वह ईश्वर भी नही बता सकता है। इसलिए भविष्यवाणियों से मानव समाज का मानसिक व आर्थिक शोषण करना गलत है।

प्रश्न : मृतक की शोक सभा में जीव की सदगति की प्रार्थना का क्या औचित्य है?

समाधान : ऐसा सम्भव नही है कि प्रार्थना से जीव को सद्गति मिलती है। ईश्वरीय व्यवस्था में दूसरे जीवों के कर्मो का फल किसी दूसरे जीव को नही मिलता। शरीर को छोड़ चुके जीव को आगे मिलने वाले शरीर उसके कर्मो के आधार पर ईश्वरीय व्यवस्था पर मिर्धारित है।

प्रश्न : क्या श्राद्ध आदि के द्वारा मृत्यु को प्राप्त हो चुके अपने पितरों को भोजन आदि प्राप्त करवा सकते हैं?

समाधान : ऐसा नही हो सकता है। श्राद्ध वस्तुतः जीवित पितरों का ही हो सकता है। मृत पितरों से किसी प्रकार का कोई भी सम्बन्ध जीवित मनुष्य के लिए सम्भव ही नही है। (साभार : कर्म एंव कमर्फल मीमांसा, लेखक सतीश आर्य)

शिशु–यकृत रोग–नाशक दवा

दीपचन्द्र अग्रवाल, मथुरा

बच्चों को प्रायः लीवर की बीमारी हो जाती है और वह बड़ी भयानक होती है। सहज में अच्छी नहीं होती। यहाँ नीचे मैं एक नुस्खा लिख रहा हूँ, इससे बहुत से बच्चों की जान बच चुकी है। दवा यह है–

- जायफल(बाजार में पंसारी के यहाँ मिलता है), टींट की जड़(यमुना के खादर में बहुत मिलती है), बड़ी हर्रे, काला नमक।
- जायफल को गाय के दूध में तीन–चार बार उबालकर प्रयोग में लावें।

सेवन विधि–इस जायफल को तथा तीनों और चीजों को किसी साफ पत्थर पर रगड़कर एक चम्मच पानी में सुबह तथा शाम को ७–८ दिनों तक दें। प्रभु–कृपा से लाभ होगा यह अचूक रामबाण दवा है।

सर्दी की दो अचूक दवाएँ

1. २ तोला साँवाँ का पुराना चावल लेकर तवे पर धीमी आँच में भूजकर फिर थोड़ा–सा सेंधा नमक एवं एक चने के बराबर शुद्ध घी उसमें मिलाकर प्रातः और रात्रि में सेवन करने से सर्दी पूर्ण रूप से ४–५ दिन में ठीक हो जाती है।

(शैलेन्द्रकुमार अवस्थी, इलाहाबाद)

2. सुहागे को भूनकर महीन पीस लिया जाय और किसी साफ शीशी में भरकर रख दिया जाय। सर्दी लगने पर चार रत्तीभर वह चूर्ण गरम जल या गरम चाय के साथ दिन में तीन बार दिया जाय। दो–तीन दिनों में ही सर्दी ठीक हो जाएगी।

(रामविलास शर्मा, विलासपुर)

आयुर्वेदिक चिकित्सा

—डॉ0 वैद्य भगवान दास

1. इन्फ्लूएंजा

इन्फ्लूएंजा एक संक्रामक रोग है। इसमें नाक से बहुत अधिक कफ निकलना, जुकाम, नाक, स्वरयंत्र और श्वास–नलिका में सूजन, कष्टदायक बुखार, दुर्बलता, नाड़ियों और मांसपेशियों में दर्द, जठरांत्र–प्रणाली में विकार और नाड़ियों से संबंधित गड़बड़ आदि लक्षण दिखाई देते हैं। यह रोग निस्पंदी विषाणुओं से उत्पन्न होता है और प्रायः व्यापक रूप में ही फैलता है।

इन्फ्लूएंजा ज्वर अधिकतर मौसम बदलने के समय फैलता है। आयुर्वेद में इसे वात–श्लैष्मिक ज्वर के नाम से जाना जाता है। ऋतु–परिवर्तन के दौरान, जब तापमान में अंतर आता है तथा वर्षा आदि होती है, तो इस कारण एक सामान्य व्यक्ति के शरीर में वात, पित्त और कफ दोषों की संतुलित अवस्था में थोड़ी–बहुत गड़बड़ आ जाती है। इसके परिणामस्वरूप इन्फ्लूएंजा रोग का आक्रमण होता है। ऐसे व्यक्ति जिनमें कब्ज बनी रहती है, जिनकी नाक की श्लेष्मल झिल्ली अथवा गले में विकार पाया जाता है, इस रोग के अधिक शिकार होते हैं।

उपचार

चूंकि इस रोग में अधिकतर गैस से संबंधित शिकायतें भी पाई जाती हैं, अतः पिप्पली (मगां) इसके लिए बहुत फायदेमंद और अच्छी औषधि मानी गई है। इसे पीसकर चूर्ण बना लेना चाहिए। इस चूर्ण का आधा चम्मच (छौटा) दो छोटे चम्मच शहद और आधा चम्मच अदरक के रस में मिलाकर रोगी को सेवन करना चाहिए। यह औषधि दिन में तीन बार दी जा सकती है। यदि यह औषधि ज्वर के आरम्भ में ही दे दी जाए, तो इससे तापमान का अधिक बढ़ना रुक जाता है। यह औषधि रोगी के शरीर में कास या श्वास नली में सूजन और गले में कफ जमना जैसी शिकायतों के आक्रमण से बचने के लिए प्रतिरोधी शक्ति को भी बढ़ाती है।

इस रोग में दूसरी उपयोगी औषधि है–तुलसी की पत्तियां और सोंठ का चूर्ण, दोनों बराबर–बराबर मात्रा में मिलाकर चाय बनानी चाहिए। यह चाय इस ज्वर के लिए बहुत लाभकारी है। इस चाय में दूध और चीनी मिलाकर भी दी जा सकती है। इसका सेवन दिन में तीन या चार बार करना चाहिए।

इस ज्वर के लिए एक दूसरी बहुत ही साधारण और लाभकारी औषधि हल्दी है। एक छोटा चम्मच हल्दी का चूर्ण या पेस्ट लेकर एक प्याला दूध में मिलाएं। दूध में चीनी भी मिलाई जा सकती है। इस दूध का सेवन दिन में तीन बार कराया जाना चाहिए। इससे रोग जल्दी ठीक होता हैं शरीर में दर्द और कब्ज दूर होते हैं। यह फेफड़ों में जमे कफ को दूर करती है तथा यकृत् को कार्य करने में चुस्त बनाती है।

इन्फ्लूएंजा की चिकित्सा के लिए वैद्य लोग त्रिभुवन कीर्ति रस नामक औषधि का सामान्य रूप में प्रयोग करते हैं। यह बाजार में बनी बनाई औषधि मिलती है, जो गोलियों और चूर्ण, दोनो रूपों में मिलती है। इस औषधि का सेवन दो रत्ती या दो गोलियों को मात्रा में, एक चम्मच शहद के साथ मिलाकर कराना चाहिए। ज्वर की स्थिति के अनुसार यह दिन में तीन से चार बार तक दी जा सकती है।

आहार

ज्वर शुरू होने पर यदि रोगी कम से कम दो समय तक उपवास रखे या बिल्कुल हल्का भेजन ले, तो अच्छा रहता है। रोगी को भोजन में जौ का पानी

या दूध और चीनी के साथ उबाला हुआ साबूदाना खाने को देना चाहिए। इसके अतिरिक्त डबलरोटी, बिस्कुट, सब्जियों का सूप भी दिया जा सकता है। कच्चा या घी अथवा मक्खन के साथ भुना हुआ लहसन भी ऐसे रोगी के लिए बहुत अच्छा है। इस लहसुन की दस गिरियां तक रोगी को दी जा सकती हैं। सूप और सब्जियों में अदरक मिलाया जा सकता है।

चावल, गेहूं की रोटी, तली हुई चीजें, जैसे–परांठा, दही, खट्टे पदार्थ, ये सब इस बुखार में बिल्कुल नहीं लेने चाहिए। फलों में केला, अमरूद और अन्य खट्टे पदार्थ हानिकारक हैं। इस रोग में चाय बहुत हानिकारक है, कॉफी थोड़ी मात्रा में दी जा सकती है।

कनपेड़ या गलसुआ (Mumps)

यह रोग एक बहुत तीव्र संक्रामक रोग है, जिसमें कानों के पास ही कर्णपूर्व ग्रंथियों में सूजन आ जाती है। अयुर्वेद में इस रोग को पार्श्व गर्दभ नाम से जाना जाता है।

इस रोग की सबसे पहली पहचान प्रायः कर्णपूर्व ग्रंथि की सूजन ही है। कान के समीप के स्थान में दर्द और जकड़न एक या दो दिन तक बनी रहती है। इसके साथ–साथ रोगी को बुखार भी महसूस हो सकता है। कंपकपी और गले में जलन जैसी शिकायतें भी हो सकती है। इस रोग में, प्रारम्भ में केवल एक ही ग्रंथि प्रभावित होती है। इसके उपद्रव के रूप में अंडकोषों में भी सूजन हो सकती है।

उपचार

गलसुआ की चिकित्सा में सामान्य रूप से दारूहरिद्रा के चूर्ण को प्रयोग में लाया जाता है। इस वृक्ष की लकड़ी को पीसकर बारीक चूर्ण तैयार किया जाता है। इस चूर्ण को घी और शहद के साथ मिलाकर, हल्का गर्म करके प्रभावित स्थान पर लगाना चाहिए। इसका प्रयोग यदि सोते समय किया जाए, तो अधिक लाभ होता है। सूजन वाले स्थान पर सूखी और गर्म सिकाई करनी चाहिए। खाने के लिए नारदीय लक्ष्मीविलास रस नामक औषधि उपयोगी है। इसकी दो–दो गोलियां दिन में दो बाद शहद में मिलाकर रोगी को देनी चाहिए।

आहार

इस रोग के आक्रमण के दौरान ज्यादातर रोगी को भूख कम लगती है। लहसुन, अदरक, काली मिर्च और पिप्पली इस रोग में बहुत लाभ पहुंचाते हैं। तले हुए और खट्टे खाद्य–पदार्थों से परहेज रखना चाहिए।

अन्य आचार–व्यवहार

रोगी को गर्म और ठोस भोजन नहीं देना चाहिए। ठंडी हवा और बारिश से बचकर रहना चाहिए। गर्दन और सिर के आस–पास ऊन का स्कार्फ बांधकर रखना चाहिए, जिससे रोगी के अंगों को गर्मी पहुंचे। इस प्रकार रोग से शीघ्र छुटकारा हो सकता है।

नेत्रोपयोगी निर्दोष औषधि

डॉ. राधेश्याम रूँगटा

नीम पेड़ पर लगा हुआ मधु कम–से–कम दो वर्ष पुराना आधी छटाँक (यदि शुद्ध कमल मधु मिल सके तो अति उत्तम) एक शीशी में ले लें, उसमें श्वेत पुनर्नवा का रस दस बूँद डाल दें और जस्ते की सींक से मिला दें। दवा तैयार है। इस दवा को प्रातः तथा रात्रि को सोने के समय दोनों आँखों में हाथ की अँगुली से अंजन करें तथा नित्य–प्रति उपयोग करने का नियम बना लें। नेत्र–ज्योति बढ़ेगी, चश्मा लगाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी और नेत्रों की सुन्दरता बढ़ेगी। अनेक लोगों को लाभ हुआ है।

आर्यसमाज के तीन स्कन्ध

—आर्य रविन्द्र कुमार जी

धर्म के तीन स्कन्ध

छान्दोग्य उपनिषद् के अनुसार ''त्रयो धर्मस्कन्धा—यज्ञोऽध्ययनं दानमिति'' अर्थात् यज्ञ, अध्ययन व दान धर्म के तीन स्कन्ध है।

(क) यज्ञ अर्थात् होम

ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा। नृयज्ञं पितृयज्ञं च यथाशाक्ति न हापयेत्। (मनु. ४।२१)

''ऋषियज्ञं (ब्रह्मयज्ञं/संध्या), देवयज्ञं (अग्निहोत्र/हवन), भूतयज्ञ (बलिवैश्वदेवयज्ञ), नृयज्ञ (अतिथियज्ञ) और पितृयज्ञ, इन पंच महायज्ञों को सदा ही जहां तक हो कभी न छोडें।''

यज्ञ करने से वायु शुद्ध होकर देश में अधिक वृष्टि होती है और वृष्टि से अन्न होता है। यज्ञ का विस्तार महायज्ञ है जो पांच हैं। इन्हें नित्य कर्म अर्थात् मनुष्य के प्रतिदिन के कर्तव्य भी कहा जाता है। बालक अबोध, अज्ञानी व छोटा होने के कारण माता—पिता के अधीन रहता है। इसलिए हमारे धर्मशास्त्रों में व्रतबन्ध (यज्ञोपवीत) होने से पूर्व बालकों के लिए नित्य कर्म का विधान नहीं है। धर्मानुष्ठान के सम्बन्ध में पांच कर्म नित्य कर्म में सम्मिलित हैं।

(1) ब्रह्मयज्ञ : ब्रह्म का अर्थ विद्या, वेद और परमात्मा तीनों है। यज्ञ का अर्थ शुभ विचार है। अतः ब्रह्मयज्ञ का अर्थ स्तुति, प्रार्थना तथा उपासना द्वारा वेद अथवा परमात्मा का शुभ विचार अर्थात् उसके गुणों का अध्ययन, चिंतन, मनन, मीमांसा इत्यादि करना है। ब्रह्मयज्ञ में प्रतिदिन दो बार दिन—रात की संधि के समय में सन्ध्योपासना (आचमन, अंगस्पर्श तथा प्राणायाम) अवश्य करना चाहिये। सन्ध्या के लिये किसी विशेष स्थान की आवश्यकता नहीं है क्योंकि परमेश्वर सर्वव्यापक है। इससे मनुष्य अपने दुर्गणों को छोड़ता तथा ईश्वर के गुण दया, करुणा व परोपकार की भावना से जुड़ के अपने जीवन को पवित्र बनाता है।

(2) देवयज्ञ : ''यदग्नौ हूयते स देवयज्ञः'' जो अग्नि में होम किया जाता है, वह देवयज्ञ है। यह कर्मकाण्ड से संबन्धित है। अतः देवयज्ञ का ठीक अभिप्राय होम अर्थात् अग्निहोत्र है। इससे वायु, वृष्टि, जल, औषधि पवित्र होकर सब जीवों को सुख पहुंचाती है। होम के पश्चात् वेदादि सत्य शास्त्रों अथवा अध्यात्मक विद्या—संबन्धी ग्रंथों का स्वाध्याय भी अवश्य करना चाहिये। इससे मनुष्य के शरीर से रोगादि दूर होते हैं, शरीर स्वस्थ रहता है तथा वातावरण भी शुद्ध और पवित्र होता है।

(3) पितृयज्ञ : ''यस्मिन्'' पितृभ्यो ददाति स पित्यज्ञ'' जिसमें पितरों को दिया जावे अर्थात् उनकी तन, मन व धन से सेवा की जावे, उसे पितृयज्ञ कहते हैं। इसे श्रद्धा अथवा तर्पण भी कहते हैं। पिता का अर्थ है पालन करने वाला। अतः माता—पिता, घर के अन्य बड़े, आचार्य इत्यादि सभी पितृ हैं। विद्या—सत्कार अर्थात् ऋषि—सत्कार और पितृ—सत्कार अर्थात् विद्वानों का सत्कार को भी पितृयज्ञ मानना चाहिये। इससे घर व परिवार सुखी बना रहता है।

(4) भूतयज्ञ अर्थात् बलिवैश्वदेवयज्ञ : ''यो भूवेस्य क्रियते स भूतस्य'' जो प्राणियों को भाग दिया जाता है, उसे भूतयज्ञ कहते हैं। साधारण प्राणियों का पालन करना भूतयज्ञ है। साधारण प्राणियों में रोगी, अनाथ, विधवायें, निराश्रय मनुष्य, सेवाकर्म कराने योग्य व्यक्ति, पतित, गौ आदि पालतू पशु, अन्य पशु, पक्षी आदि कृमि—कीट इत्यादि का पालन करना, सेवा करना तथा उनको भोजन देना सम्मिलित है। इससे सब जीव प्रसन्न रहते हैं व प्रकृति भी शान्त रहती है।

(5) अतिथियज्ञ अर्थात् नृयज्ञ : ''अनित्या हि स्थितिर्यस्य सोऽतिथिः सदि्भच्यते।'' जिसके आगमन की कोई निश्चित तिथि न हो और स्थिति भी जिसकी अनियमित हो वह अतिथि कहलाता है।

अतिथि अर्थात् जिसका आना, जाना और ठहरना अनियत हो, वह चाहे किसी भी वर्ग अथवा वर्ण का हो उसकी सेवा करना एक श्रेष्ठ कर्म है। इससे घर में परस्पर प्रेम व सहृदयता का वातावरण बना रहता है तथा वह स्वर्ग के समान बन जाता है।

(ख) अध्ययन

अध्ययन अर्थात् लड़कों व लड़कियों को समान अधिकार से पढ़ाना धर्म है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, स्त्री सबको पढ़ने–पढ़ाने का समान अधिकार है। अध्ययन करना अर्थात् ब्रह्मचर्य निभाना धर्म है। ब्रह्मचर्य के कारण शरीर बल और बुद्धिबल प्राप्त होता है। विवाह से पूर्व वेदाध्ययन अवश्य करना चाहिये। पूर्वकाल में आर्य स्त्रियां उत्कृष्ट रीति से पढ़ती थी। आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत धारण करती थी। उनके भी उपनयन और गुरुगृह में वास इत्यादि संस्कार होते थे। गार्गी, सुलभा, मैत्रेयी, कात्यायनी आदि सुशिक्षित थी तथा बड़े–बड़े ऋषियों–मुनियों की शंकाओं का समाधान करती थी। सभी वर्णों की स्त्रियां वेदाभ्यास का अधिकार रखती थी। मनु महाराज ने एक मंत्र के द्वारा बताया है

शूद्रो ब्रह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जातमेवं तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च।।
(मनु. १०।६५)

अर्थात् शूद्र ब्राह्मण हो जाता है तथा ब्राह्मण भी शूद्र हो जाता है। जो ब्राह्मण ब्राह्मण गुण वाला हो तो वह ब्राह्मण रहता है तथा जो ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र गुण वाला हो तो वह क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र हो जाता है। वैसे ही शूद्र भी मूर्ख हो तो वह शूद्र ही रहता है तथा जो शूद्र ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य गुण वाला हो तो वह ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य हो जाता है।

मनु महाराज विवाह में स्वयंवर के पक्षधर थे। अनका कथन है–

त्रीणि वर्षाण्युदीक्षेत कुमार्युतुमती सती।
उर्ध्व तु कालादेतस्माद्विन्देत सदृश पतिम्।।
(मनु. ६।६०)

कन्या रजस्वला हो जाने पर तीन वर्ष तक विवाह की प्रतीक्षा करे, तदन्तर अपने योग्य पति का वरण करे।

अदीयमाना भर्तारमधिगच्छेद्यदि स्वयम्।
नैनः किंचिदवाप्नोति न च यं साऽधिगच्छति।।
(मनु. ६।६१)

पिता आदि अभिभावक द्वारा विवाह न करने पर, जो कन्या यदि स्वयं पति का वरण कर ले तो वह कन्या किसी पाप की भागी नहीं होती और न उसे कोई पाप होता है जिस पति को वह वरण करती है।

मनु महाराज यह भी कहते हैं–

काममामरणात्तिष्ठेत् गृहे कन्यर्तुमत्यपि।
न चैवैनां प्रयच्छत्तु गुणहीणाय कर्हिचित्।।
(मनु. ६।६२)

चाहे मरणपर्यन्त कन्या पिता के घर में बिना विवाह के बैठी भी रहे परन्तु गुणहीन असदृश दुष्टपुरुष के साथ कन्या का विवाह कभी नहीं करना चाहिये।

(ग) दान

विद्या वृद्धि के लिये द्रव्य लगानाः कला कौशल की उन्नति के लिये धन लगानाः दीन, अपाहिज, रोगी, कुष्ठी, अनाथादिकों को सहायता करना सच्चा दान है।

वेद और मनुस्मृति के अनुसार दान का बहुत महत्व है।

सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते।
वार्यन्नगोमहीवासस्तिलकांचनसर्पिषाम्।।
(मनु. ४।२३३)

संसार में जितने भी दान हैं अर्थात् जल, अन्न, गौ, पृथ्वी, वस्त्र, तिल, सुवर्ण और घृतादि इन सब दानों से वेदविद्या का दान अतिश्रेष्ठ है। इसलिये जितना बन सके उतना प्रयत्न तन, मन, धन से विद्या की वृद्धि में किया करें। जिस देश में यथायोग्य ब्रह्मचर्य, विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार होता है वही देश सौभाग्यवान् होता है।

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन

रायपुर रोड (नालापानी), देहरादून–248008, दूरभाष : 0135–2787001

आत्मकल्याण का स्वर्णिम अवसर

योग–साधना, चतुर्वेद पारायण एवं गायत्री यज्ञ का विशेष आयोजन

तदनुसारेण 07 मार्च से 28 मार्च 2021 तक

यज्ञ के ब्रह्मा–स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी

आत्मकल्याण के जिज्ञासुओं के लिए प्रभुकृपा से तपोवन आश्रम के ऊपरी प्रभाग–पहाड़ी पर गायत्री यज्ञ एवं चतुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी की धर्मपुत्री तपस्विनी साध्वी प्रज्ञा जी ने सन् 2012 में वैदिक साधन आश्रम के ऊपरी प्रभाग में यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर 9 वर्ष तक एकान्तवास के साथ अदर्शन मौनव्रत रखते हुए तप करने का संकल्प लिया था। साध्वी प्रज्ञा जी ने धौलास आश्रम में स्वामी जी की छत्रछाया में अपना व्रत पूर्ण किया। साध्वी प्रज्ञा जी दिनांक 28 मार्च 2021 को चतुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति के शुभ अवसर पर उपस्थित होकर अपना व्रत खोलेंगी। सभी मनहानुभावों से अनुरोध है कि इस महायज्ञ तथा योगशिविर में भाग लेकर जीवन को सार्थक करें तथा साध्वी प्रज्ञा जी के 9 वर्षों की साधनाकाल के अनुभव एवं उपदेश श्रवण कर मार्गदर्शन प्राप्त करें।

सभी यज्ञप्रेमी सज्जनों और योग साधकों को 06 मार्च 2021 की सांयकाल तक पहुंचना आवश्यक होगा। 07 मार्च 2021 की प्रातःकाल से नियमित कार्यक्रम प्रारम्भ हो जायेंगे। कृपया अपने साथ चाकू, टार्च, कॉपी, पैन तथा ओढ़ने का वस्त्र अवश्य लायें।

कार्यक्रम सारिणी

प्रातः जागरण	3–4 के मध्य
योग साधना, आसन प्राणायाम, ध्यानादि	4 से 7 बजे प्रातः
यज्ञ प्रातःकाल	7:30 से 9:30
प्रातःराश	9:30 से 10:00
यज्ञ–सायंकाल	3.30 से 5.30 सायं
साधना	6.00 से 8.00 बजे रात्रि
भोजन रात्रि	9.00 बजे तक
रात्रि–शयन	1.00 से 3.00 बजे

निवेदक

दर्शन कुमार अग्निहोत्री	प्रेम प्रकाश शर्मा	अशोक कुमार वर्मा
अध्यक्ष	सचिव	कोषाध्यक्ष
09710033799	09412051586	09412058879

अमृत की एक बूंद से ही हमारी जन्मोजन्म की प्यास बुझ जाती है

—स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

जो परमात्मा में डूब गया, वह संसार का सबसे महान पुरुष है। परमात्मा में रमण करनेवाला वंदनीय होता है। हमारे ऋषि, मुनि, संत, महात्मा एवं योगीजन को चक्रवर्ती सम्राट भी साक्षात् दंडवत नमन करते है, क्योंकि उन्होंने परमात्मा को पा लिया है। असंख्य जन्मों के पुरुषार्थ का दिव्य फल–पुरस्कार ''मोक्ष'' है, ईश्वर प्राप्ति है। हमारे विद्वान योगिजन परमात्मा को प्राप्त करके जीवनमुक्त हो गये थे क्योंकि वे पंच भूतात्मक संसार से ऊपर उठकर परमात्मा की ओर बढ़े थे।

परमपिता परमात्मा स्वभाव से कृपालु हैं। उन्होंने प्रकृति के तीन कण–सत, रज और तम् को बुद्धिपूर्वक संयोग विशेष से विविध रुपो में परिवर्तित करके जीवात्माओं के लिये व्यवहार करने योग्य बनाया है इसे हम ''सृष्टि'' कहते हैं। सृष्टि को ''कार्य–जगत'' भी कहते हैं। कार्य जगत लिंग वाला होता है। स्थूल तथा सूक्ष्म पदार्थ, इन्द्रियां, मन, अहंकार, महतत्व (बुद्धि) लिंग वाले हैं।

प्रत्येक सृजित वस्तु लिंग वाली होती है। जो अपने कारण में लीन हो जाएँ उसे लिंग कहते हैं। प्रत्येक मनुष्य को प्राप्त साधन का सदुपयोग करके साधक बनना, योगी बनना जरूरी है।

साधक, योगी, ऋषि तत्वदर्शी होते है। वे मानसिक स्तर पर लिंग से अलिंग की ओर बढ़ते हैं। स्थूल से सूक्ष्म की ओर बढ़ते हैं, कार्य से कारण की ओर बढ़ते हैं। सूक्ष्मता की ओर बढ़ने से लक्षित पदार्थ अपना पूर्ण स्वरूप प्रकट करते हैं। परिणामतः मन अधिक निर्मल होकर शुद्ध आनंद, खुशी, प्रसन्नता, तृप्ति, संतोष आदि अभिव्यक्त करता है। यह जीवात्मा का अनमोल रत्न है, जिसे पाकर जीवात्मा सारे दुःखों से नितांत छूटकर पूर्ण आनंद में अवस्थित हो जाता है।

जिसका कोई कारण न हो उसे अलिंग कहते हैं। अलिंग पदार्थ शाश्वत होता है, अविनाशी होता है। वह सदा से है और सदा बना रहेगा। उसका कभी सृजन नहीं होता, नाश भी नहीं होता। इसको मूल पदार्थ भी कहते हैं। अलिंग पदार्थ–मूल पदार्थ तीन हैं। ईश्वर, जीवात्मा और परमात्मा।

ये तीन पदार्थ स्वयंभू है। उनका अस्तित्व अपने आपसे है। वे अमृत हैं, मरने वाले नहीं हैं।

योगी लिंग से अलिंग पर्यन्त अर्थात् मूल प्रकृति तक मानसिक यात्रा करता है। इतना ही नहीं, वह चेतन तत्व–आत्मा और परमात्मा का भी प्रत्यक्ष कर लेता है। परमात्मा का प्रत्यक्ष ब्रह्माण्ड का उच्चतम शिखर है, उनके बाद कुछ शेष नहीं है।

आत्मा और परमात्मा चेतन तत्व है अतः वे स्थान नहीं घेरते। प्रकृति के सत, रज और तम कण अति सूक्ष्म होते हुए भी भौतिक है, जड़ है, अतः स्थान घेरते हैं। सभी सत्व कण एकसमान होते हैं। वैसे ही रज और तम कण भी एकसमान होते हैं। वे संख्या में असंख्य होते हैं।

एक सत्व कण अन्य सत्व कण या अन्य रजस या तमस कण को अपने में प्रवेश नहीं करने देते। उनको जोड़ सकते हैं, किन्तु एक को दूसरे में प्रवेश नहीं करा सकते। क्योंकि वे भौतिक जड़ पदार्थ हैं और स्थान को घेरते हैं।

आत्मा चेतन है, अतः वह स्थान नहीं घेरता। एक ही स्थान पर, एक ही बिंदु पर सारे ब्रह्माण्ड के जीवात्मा एक साथ ठहर सकते हैं। कारण वही चेतन तत्व स्थान नहीं घेरते।

परमात्मा एक है, चेतन है, विभु है, विराट है। वह भी स्थान नहीं घेरते। अतः सारा ब्रह्माण्ड़ उसमें प्रवेश

करता है और सारे ब्रह्माण्ड़ में वह अपने सामर्थ्य से व्याप्त है। जहां ब्रह्माण्ड़ नहीं है वहां भी वह पूर्ण रूप से भरा हुआ है।

परमात्मा अंदर बाहर से, ऊपर नीचे से, सर्वत्र ओत प्रोत है। एक आकाश की सीमा हो सकती है, एक अंतरिक्ष की क्षितिज हो सकती है, किन्तु उस परमात्मा की नहीं। परमात्मा असीम है। उसकी कोई मर्यादा नहीं, कोई बंधन नहीं। मन की पहुंच से वह बाहर है। मोक्ष आत्मा भी उसे पूर्ण रूप से भोग नहीं सकता।

जीवात्मा चेतन होते हुए भी अणु रूप है, असंख्य है। प्रत्येक का अपना निजी अस्तित्व सदा से है। जीवात्मा को पूर्ण तृत्त होने के लिए केवल मोक्ष की एक बूंद ही चाहिए। अणु स्वरूप जीवात्मा की जन्मों जन्म की प्यास विराट स्वरूप परमात्मा की एक बूंद से ही बुझ जाती है। यही हम जीवात्मा की पूर्णता है, जीवन का साफल्य है, अनंत यात्रा का समापन है।

जीवन में आपको उत्साह बढ़ाने वाले प्रेरक व्यक्ति भी मिलेंगे, और निराशावादी आलसी उत्साहभंजक लोग भी। प्रेरक व्यक्तियों के साथ रहें। उत्साह भंजक लोगों से दूर रहें।

संसार में कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिनके विचार सकारात्मक चिंतन वाले होते हैं। वे हमेशा स्वयं अच्छे काम करते हैं, और दूसरों को भी अच्छे काम करने के लिए सदा प्रेरित करते–रहते हैं। ऐसे प्रेरक व्यक्ति स्वयं तो सुखी रहते हैं, साथ ही साथ, अन्य कमजोर अथवा उत्साहहीन लोगों को भी प्रेरित करके, उन्हें भी जीवन में आगे बढ़ाते तथा सुखी करते हैं। ऐसे लोग केवल प्रेरणा ही नहीं देते, बल्कि अनेक प्रकार से सहयोग देकर समाज की उन्नति भी करते हैं। कोई व्यक्ति तो निर्धन बच्चों को पुस्तके खरीदने में आर्थिक सहायता देता है। कोई उन्हें मुफ्त में पढ़ा देता है। कोई उनके भोजन आदि की व्यवस्था कर देता है। कोई उनके लिए दूध की, तथा कोई उनके लिए वस्त्र आदि बनवा देता है। इसी प्रकार से कोई उत्साही व्यक्ति रोगियों की चिकित्सा करवा देता है। कोई धर्मशाला बनवा देता है। कोई आई.ए.एस. आदि उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले निर्धन विद्यार्थियों की सहायता करता है। कोई वैदिक धर्म के प्रचार में दान देता है। धन्य हैं ऐसे लोग, जो परोपकार की भावना से समाज की सेवा करते रहते हैं। ऐसे लोगों के संपर्क में रहना चाहिए जिससे आपकी सब प्रकार की उन्नति होती रहे और एक दूसरे को परस्पर सहयोग भी मिलता रहे।

परन्तु संसार में कुछ लोग ऐसे भी देखे जाते हैं, जो नकारात्मक चिंतन वाले होते हैं। उन्हें किसी भी जगह पर कुछ भी अच्छा नहीं दिखता। उन्हें हर जगह समस्याएं ही दिखती हैं। समस्याएं न हों, तो भी उनका नकारात्मक चिंतन नई समस्याएं उत्पन्न कर देता है। जिसके कारण वे स्वयं तो दुःखी रहते ही हैं, साथ ही अपने अशुद्ध एवं निराषाजनक चिंतन से, दूसरों को भी निरुत्साहित करते रहते हैं। ऐसे लोग उत्साहभंजक कहलाते हैं। ऐसे लोगों के साथ रहने पर, धीरे–धीरे वे अपने निराशावादी विचार आपके अंदर भी डालते जाएंगे। कुछ दिनों में आपका चिंतन भी उनके समान निराशावादी हो जाएगा। इससे आपका उत्साह धीरे–धीरे कम हो जाएगा, और आप किसी भी क्षेत्र में निश्चिंत होकर उत्साहपूर्वक पुरुषार्थ नहीं कर पाएंगे। हर जगह आशंकाएं आपको सताएंगी। जब सफलता में आशंकाग्रस्त होकर आप पूरी तरह से परिश्रम नहीं करेंगे, तो आपको आपके कार्यों में सफलता भी नहीं मिल पाएगी। परिणाम यह होगा, कि आप भी उन जैसे निराश हताश और दुःखी हो जाएंगे। आपका जीवन ही पूरी तरह से अस्त–व्यस्त तथा नष्ट हो जाएगा। इसलिए ऐसे लोगों से जरा बच के रहना चाहिए, दूर रहना चाहिए। ताकि ऐसे लोग आपको हानि न कर पाएं।

जब कभी आपको ऐसे निराशावादी लोग मिलें और ऐसी निराशाजनक बातें करें, तब उनकी बातों पर ध्यान न दें। अपने लक्ष्य को ध्यान में रखकर उसकी प्राप्ति के लिए पूर्ण पुरूषार्थ करें। उत्साही लोगों के संपर्क में रहें। वे आपकी शक्ति को बढ़ाते रहेंगे। उनकी सहायता से आप अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर लेंगे। इस प्रकार से अपना चिंतन विचार योजना

और व्यवहार बनाना चाहिए।

एक बहरा व्यक्ति था। उसे कुछ भी सुनाई नहीं देता था। शरीर से भी वह दुबला–पतला था। एक बार उसे एक छोटी पहाड़ी पर चढ़ने की इच्छा हुई। उसने अपने मन में संकल्प किया और वह पहाड़ी पर चढ़ने लगा। निराशावादी लोगों ने देखा और उसे टोकना आरंभ किया। अरे भाई तुम दुबले–पतले हो। तुम उस पहाड़ी पर नहीं चढ़ पाओगे। इसलिए यह खयाल अपने मन से निकाल दो, इत्यादि।

इस प्रकार से वे लोग कहने लगे, और उस बहरे व्यक्ति का उत्साह भंग करने लगे। परंतु वह तो बहरा था। उसे तो कुछ भी सुनाई नहीं दिया। वह अपनी धुन में मस्त पहाड़ी पर चढ़ता गया। वे आलसी, उत्साहभंजक लोग देर तक चिल्लाते रहे, परंतु उनके चिल्लाने का उस बहरे व्यक्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। क्योंकि उसे कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था। परिणाम यह हुआ कि वह अपने संकल्प के अनुसार पहाड़ी पर चढ़ गया, और उसने अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लिया। बाद में उन उत्साह भंग करने वाले लोगों को पता चला कि वह व्यक्ति तो बहरा था।

इस घटना से आप और हम सब लोग, यह शिक्षा ले सकते हैं, कि जब निराशावादी लोग आपका भी उत्साह कम करने लगें, तो आप भी उस बहरे व्यक्ति के समान हो जाएं। उनकी बात पर कोई ध्यान न देवें। अपने लक्ष्य की ओर उत्साह पूर्वक चलते रहें। यदि आप का लक्ष्य सही है, संविधान के अनुकूल है, और आप उत्साहपूर्वक पूर्ण पुरुषार्थ करेंगे, तो निश्चित रूप से आपको सफलता मिलेगी, जैसे उस बहरे को मिली थी।

निरोग रहने में सहायक कुछ सरल बातें

– वैद्य श्री हरिशंकर जी त्रिपाठी

1. प्रातःकाल उठकर कुल्ला करके आधा लीटर पानी पीयें। इसे उषःपान कहते हैं। इससे कब्ज नहीं होता, पेट साफ रहता है।
2. सप्ताह में एक बार छोटी हर्रे का चूर्ण ३ ग्राम, ईसबगोल भूसी 3 ग्राम मिलाकर रात में गुनगुने पानी से लें, यह विरेचक है।
3. 7 बादाम, 7 मुनक्का, 7 काली मिर्च और 14 बड़ी इलायची के दाने मिलाकर पीस लें। थोड़ी–सी चीनी मिलाकर गर्मियों में शर्बत बनाकर तथा सर्दियों में चटनी के रूप में लें। इससे शरीर को ऊर्जा मिलेगी। बादाम गिरी भिगोकर ऊपर का छिलका हटा दें और मुनक्का के बीज हटा लें।
4. 6 ग्राम चना, 6 ग्राम मूंग, 6 ग्राम गेहूँ भिगोकर अंकुरित करके प्रतिदिन प्रातःकाल धीरे–धीरे चबाकर खायें। इसके आधा घंटा आगे–पीछे कुछ न लें। यह योग अत्यन्त शक्तिवर्धक और सरल है।
5. आँखों में प्रतिदिन सुबह–शाम पीली सरसों का तेल अंगुली से लगायें। इससे आँखें निरोग रहेंगी। मोतियाबिन्द न होगा और दृष्टि साफ रहेगी।
6. सेंधा नमक का कपड़छान चूर्ण सरसों के तेल में मिलाकर दातों एवं मसूड़ों में धीरे–धीरे मलें। मुख की दुर्गन्ध दूर हो जाएगी। पायरिया नहीं होगा। दाँत स्वच्छ और मजबूत होंगे।
7. प्रतिदिन कुछ आसन, व्यायाम, सूर्य नमस्कार की क्रयाएं या 2–3 मील का भ्रमण अवश्य करें, इससे शरीर पुष्ट होगा, स्फूर्ति आयेगी।
8. पंद्रह दिन में एक दिन उपवास रखें। उपवास में केवल जल लें। इससे पेट को विश्राम मिलेगा और उसकी क्रियाएं अधिक संक्रिय होंगी।
9. हंसना और सदा प्रसन्न रहना निरोग रहने की अद्‌भुत औषधि है।

अनेक रोगों में उपयोगी हैं फल

सुश्री पद्माजी

फल स्वादिष्ट एवं मीठे होने के साथ–साथ विभिन्न खनिज तत्वों और विटामिनों से भरपूर होते हैं। सभी फलों के अपने–अपने गुण होते हैं। इनका प्रयोग करके हम अनेक कष्टों से छुटकारा पा सकते हैं।

अमरूद

अमरूद को गरम रेत में भूनकर खाने से खांसी में लाभ मिलता है। दन्त–पीड़ा में अमरूद के पत्तों को फिटकरी के साथ मिलाकर कुल्ला करने से आराम मिलता है। अमरूद के पत्तों में पान की तरह कत्था लगाकर खाने से मुँह के छाले ठीक हो जाते हैं। अमरूद के छोटे–छोटे टुकड़े कतरकर पानी में डाल दें। कुछ देर बाद उस पानी को छानकर पीने से मधुमेह या बहुमूत्रता से उत्पन्न प्यास दूर होती है। अमरूद के पत्तों को पीसकर उसके रस को पीने से उदर में होने वाला दर्द दूर हो जाता है।

केला

टाइफाइड़ बुखार के उतरने के बाद छोटी इलायची के चूर्ण के साथ रोगी को पका केला खिलाने से बुखार से आयी दुर्बलता शीघ्र दूर हो जाती है। पेट की जलन में पका केला खायें। मुंह में छाले हो जायं तो पका केला खाना चाहिये। दस्त लगने पर पका केला दही में मथकर खाना चाहिए। पीलियारोग में रोगी को कम–से–कम चार पके केले नित्य खाने चाहिए।

संतरा

संतरे के रस में सोंठ का चूर्ण मिलाकर नियमित पीने से भूख लगती है। संतरे के छिलकों को पीसकर नींबू का रस मिलाकर चेहरे पर लगाने से चेहरे का रंग साफ होता है। कब्ज, सूखा, दन्तरोग आदि में संतरे का रस लाभदायक है। नेत्रों में संतरे का रस काफी फायदा करता है।

अनार

अधिक प्यास लगने, जी मिचलाने आदि में अनार के रस में आधा नींबू निचोड़कर पीयें। अनारदाना, सौंफ, धनिया–तीनों को बराबर मात्रा में लेकर चूर्ण करा ले, दो ग्राम चूर्ण में एक ग्राम मिश्री मिलाकर दिन में चार बार सेवन करने से खूनी दस्त, खूनी आँव में आराम मिलता है।

अनार छिलके को उबालकर उसके पानी से घावों को धोने से घाव जल्दी भरता है। दातों के मसूडों से खून आता हो तो अनार के फूलों के चूर्ण से मंजन करने से आराम मिलता है। सूखा अनारदाना पानी में भिगो दें, तीन–चार घंटे बाद इस जल को थोड़ा–थोड़ा मिश्री मिलाकर कई बार पिलाने से उल्टी, जलन, अधिक प्यास आदि रोग नश्ट होते हैं।

गाजर

गाजर पीसकर गरम करें। उसमें हल्का सेंधा नमक मिलाकर खज, खुजली आदि पर लेप करें। गठिया में एक गिलास गाजर के रस के साथ एक चम्मच अजमोदा चूर्ण दिन में तीन बार कुछ दिन लगातार लें। गाजर के टुकडों को नमक, नींबू, अदरक और पुदीने के साथ दिन में तीन बार सेवन करने से अरुचि नश्ट होकर भूख लगती है।

आग से जल जाने पर गाजर को पीसकर लेप करने से जलन शीघ्र शान्त हो जाती है। मधुमेहरोग में गाजर अमृत है। इसके एक गिलास रस में एक कप करेले का रस मिलाकर या एक गिलास गाजर के रस में आधा कप आंवले का रस मिलाकर दिन में तीन बार लेना चाहिये।

महात्मा जी की अनुभूतियाँ

वीतराग महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज

आवश्यकताएँ :

शरीर की कर्म से, मन की उपासना से, बुद्धि की ज्ञान से आवश्यकता पूरी होती हैं।

1. भूमि हमारी है, पर अन्न मूल्य के बराबर पड़ता है। कपास हमारी है, पर कपड़ा महंगा खरीदना पड़ता है। जल हमारा है, पर जल मोल बिकता है।

2. शरीर को अन्न, जल, वस्त्र की आवश्यकता है, जिससे उसकी शान्ति, तृप्ति और रक्षा होती है। शुद्ध अन्न, शुद्ध जल, शुद्ध वस्त्र से शरीर शुद्ध पवित्र बलवान् होता है। इनसे शरीर की रक्षा होती है और ये तीनों वस्तुएं पुरुषार्थ करने से प्राप्त होती है। मन की शान्ति, तृप्ति और रक्षा उपासना से होती है। उपसना का दूसरा नाम प्रेम है। यह दो प्रकार का है–

प्रभु प्रेम, प्रजा का प्रेम

प्रभु की प्रजा के प्रेम का नाम त्याग है–अर्थात् जिस के लिए जिस वस्तु का त्याग करेगा उसी से प्रेम और उसी को प्यारा लगेगा। कुटुम्ब के लिए त्याग करेगा, कुटुम्ब को प्यारा लगेगा, समाज के लिए करेगा, तो समाज को प्यारा लगेगा, जाति के लिए करेगा तो जाति को प्यारा लगेगा। देश के लिए करेगा तो देश को प्यारा लगेगा, संसार के लिए त्याग करेगा, संसार भर को प्यारा लगेगा, पर यह सब त्याग तन, और तन की सम्पत्ति–धन, के नाम का है। प्रभु का प्यारा–तन और धन के त्यागने से नहीं बन सकता। प्रभु के लिये मन का त्याग, और मन की सम्पति (ममत्व) का त्याग चाहिए। इससे प्रभु के नाम का प्यारा बन सकेगा।

तीन प्रकार की सेवा

3. बहुत से लोग ऐसे भी हैं जो तन से तो कमाल की सेवा करते हैं पर जब धन का प्रश्न आ जावे वहां से हट जाते हैं। ऐसे लोगों की सेवा कंगाल–सेवा कहलाती है और कई ऐसे लोग हैं जो कहते हैं–हमारे तन को कुछ न कहो–धन जितना चाहो, या यथाशक्ति हमसे ले लो, शेष अपने आप करो। ऐसे लोगों की सेवा अमीर सेवा कहलाती है। जो लोग धन और तन, अर्थात् मन और तन की सम्पति अर्पण कर देते हैं वह सेवा राज्य–सेवा कहलाती है–जैसे राजा का सब कुछ राष्ट्र के लिए होता है, और वह स्वयं भी राष्ट्र को होता है।

4. आत्मा की तृप्ति, शान्ति और रक्षा, सत्य ज्ञान से होती है और वह प्राप्त होता है– आत्मनिरीक्षण से, प्रकृति के स्वाध्याय से, तप और जप से।

मन्दिर या वेश्याघर

आध्यात्मिक रीति से मनुष्य का घर था तो मन्दिर! पर बन गया वेश्याघर

जिस मुहल्ले, गली या आंगन में एक भी लुच्चा–लफंगा या डाकू–चोर, दुराचारी रहता हो, सारे मुहल्ले उसकी ताड़ रखते हैं। अपनी वस्तुओं को अन्दर समेटते हैं, सुरक्षित रखते हैं। अपनी बहु–बेटियों को बाहर नहीं निकलने देते। उस दुराचारी को मिलकर मारते–पीटते, बदमाशी की मुहर लगवाते, यहां तक कि उसे वहां से निकलवा कर कैदखाने में–सरकारी पहरे में भिजवाते हैं। तब चैन लेते हैं।

जिस ग्राम या नगरी के चारों ओर बदमाश–डाकू रहते हों, वह रात भर पहरा लगाते, चौकीदार जगवाते, स्वयं रात को उठ–उठकर देखते और अपनी जान व माल और इज्जत (प्रतिष्ठा) की रक्षा

के लिए तलवार–बन्दूक का लाइसेंस लेते हैं। समय–समय पर पुलिस अधिकारी से शिकायत करते और अनको बंधवाने का प्रबन्ध कराते हैं, पर जिसके घर के अन्दर ही हरामी हों, व्यभिचारी–दुराचारी भी हों (काम) चोर (लोभ), गठकतरे (क्रोध), उन्मत्त (मोह), अभिमानी किसी को कुछ न समझने वाले भी हों और वह जानता भी हो, और फिर दिन–रात में परवाह न करे। कभी वे बालक कन्याओं (बुद्धि) को छेडें, उन्हें हर ले जावें, कभी ज्ञान रूपी सम्पत्ति के गठकतरे (क्रोध) बनें, कभी कुटुम्ब परिवार को उन्मत्त (मोह) बना देवें, कभी चोरी, जारी सिखा देवें, और स्वयं बन जावें, उनको निकलवाने के, पहरा लगाने के, कोई प्रबन्ध न करें, उनके साथ ही मिल जावें तो उसे उस कंजर के सिवाय और क्या कहा जावे जो कि अपने घर के अन्दर अपनी ही बहू–बेटियों के लिए बाहर से व्यभिचारी मनुष्यों को बुलाता है, अन्तेवास देता है, उनके साथ मेल–जोल करता है। वैसा मनुष्य हाय! खेद! भगवान्! आओ! हमारी बिगड़ी दशा संवारो। हमारी दशा तो अत्यन्त लज्जाप्रद है। हम तेरे दरबार में मुंह ही कैसे दिखा सकते हैं?

मुँह के छालों की रामबाण दवा

– ठाकुर चन्द्रपालसिंह चौहान

सर्दियों में पानी के कम सेवन से तथा गर्मी पैदा करने वाले खाद्य पदार्थों के सेवन करने से, या अन्य किसी गरम वस्तु कु खाने से, पेट की खराबी से, ज्यादा तरबूज या खरबूज के खाने से मुँह में छाले पड़ जाते हैं। इन छालों को सही करने हेतु निम्न प्रयोग दिये गये हैं।

छालों की पहचान–मुँह में छाले होन पर मुँह में मिठाई, मट्ठा, जलतक किसी भी वस्तु के खाने–पीने पर जलन होती है। छालों के कई भेद होते हैं। मुँह में छोटे–छोटे छाले बहुधा जलन के कारण होते हैं। वे लाल रंग के भी होते हैं तथा सफेद रंग के भी। हाथ फिराने पर खुरदुरी फुंसी सा प्रतीत होते हैं। इनसे बड़ी जलन होती है। बड़े छाले सफेद रंग के होत हैं, छूने पर जलन होती है। इनको नष्ट करने का उपाय है–

1. छाले होठों तथा जीभ पर हों तो थोड़ी सी फिटकरी की डली लेकर किसी अपने साथी से छालों पर मलवावे। छालों पर फिटकरी रगड़ से जो द्रव पैदा हो, उसे बाहर जमीन पर उगल दे। दिन में 2–3 बार ऐसा करने से छाले शर्तिया नष्ट हो जाते हैं।
2. गले के भीतर तक छाले हों तो फिटकरी का घोल बनाकर उसका प्रयोग करें। एक छटाँक फिटकरी में एक पाव पानी ड़ालकर घोल बना लें। इस घोल के कुल्ले करें। कुल्ला का जल बाहर पृथ्वीपर थूक दें, छाले निश्चित ही मिट जाएंगे।

पवमान पत्रिका के पाठकों द्वारा देय शुल्क

हरियाणा

Customer No.	Name	District	Exp-Date	Outs. Amount
HRY-6	श्री वीरेन्द्र भगत	हरियाणा	Jun-19	400
HRY 8	वेद वती आर्य	अम्बाला	Feb-20	200
HRY 10	ष्श्री चन्द्रमुनि बालचन्द आर्य ष	सिरसा	May-19	400
HRY 28	श्री यश वर्मा जी	यमुनानगर	Apr-21	200
HRY 42	प्रधान छोटे लाल आर्य	महेन्द्रगढ	Jan-19	400
HRY 59	दर्शन गुप्ता	फरीदाबाद	Aug-18	600
HRY 63	रामवती गर्ग	फरीदाबाद	Aug-18	600
HRY 72	महेन्द्र प्रताप आर्य	गुडगांव	Jun-18	600
HRY 83	श्री केवल सिंह आर्य जी	हरियाणा	Sep-20	200
HRY 110	श्रीमती सुमित्रा आर्य जी	हरियाणा	Mar-19	400
HRY 118	श्री रविन्द्र गुप्ता	फरीदाबाद	Feb-21	200
HRY 123	निष्काम मुनि जी	फरीदाबाद	Apr-18	600
HRY 153	श्री रामसिंह पुत्र श्री खचेडु राम	हरियाणा	Jun-19	400
HRY 170	श्री विजय नाथ सिकरी	कुरूक्षेत्र	Jun-19	400
HRY 190	महेन्द्र प्रताप आर्य	जगाधरी	Aug-19	400
HRY 191	श्री अशोक मेहन्दीरत्ता जी	यमुनानगर	Aug-19	400
HRY 192	श्री जगदीश मदान जी	जगाधरी	Aug-19	400
HRY 194	श्री वीरेन्द्र मित्तल (शालू) सुपुत्र	जगाधरी	Aug-19	400
HRY 195	श्री विकास बन्सल (विक्की)	जगाधरी	Aug-19	400
HRY 196	श्री इन्द्रराज मग्गो (मलिक साहब)	जगाधरी	Aug-19	400
HRY 197	श्री सुभाष आहुजा जी	जगाधरी	Aug-19	400
HRY 198	श्री विजय शर्मा जी	जगाधरी	Aug-20	200
HRY 199	श्री वीरेन्द्र वधवा जी	जगाधरी	Aug-19	400
HRY 200	श्री विपन अग्रवाल जी	जगाधरी	Aug-19	400
HRY 201	श्री वेद गोयल हैण्ड लूम शॉप	जगाधरी	Aug-19	400
HRY 204	श्री राजीव सखूजा	जगाधरी	Aug-19	400
HRY 205	श्री नानक चन्द बनारसी दास	जगाधरी	Aug-19	400
HRY 209	श्री सचिन बुद्धिराजा	यमुनानगर	Aug-19	400
HRY 210	श्री राजकुमार वर्मा जी	यमुनानगर	Aug-19	400
HRY 211	श्री तिलक राज वर्मा	यमुनानगर	Aug-19	400
HRY 214	श्रीमती वन्दना गौरी पत्नी श्री कश्मीरी लाल	यमुनानगर	Aug-19	400
HRY 217	श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य सुपुत्र	जगाधरी	Aug-19	400
HRY 221	श्री अमित ढुकराल जी	जगाधरी	Sep-19	400

HRY 222	श्री रोकेश बन्सल जी	जगाधरी	Sep-19	400
HRY 223	श्री अजय मानिक टाहला जी	यमुनानगर	Sep-19	400
HRY 224	श्री अनिल भगत सुपुत्र श्री हंसराज	यमुनानगर	Sep-19	400
HRY 229	श्री अशोक विग जी	जगाधरी	Sep-19	400
HRY 235	श्री सुरेन्द्र मदान जी	जगाधरी	Sep-19	400
HRY 239	श्री संदीप गोयल प्रोपर्टी डीलर	यमुनानगर	Sep-19	400
HRY 251	श्री सुरेन्द्र मोहन जी (कुमार साहब)	जगाधरी	Oct-19	400
HRY 254	श्री मंगल सैन गम्भीर जी	जगाधरी	Nov-19	400
HRY 255	श्री श्रीराम ग्रोवर जी	जगाधरी	Nov-19	400
HRY 257	बाला आर्य जी	हरियाणा	Nov-18	600
HRY 258	श्रीमती इन्द्रा दहिया जी	हरियाणा	Nov-18	600
HRY-268	श्री पंकज आर्य	सोनीपत	Dec-18	600
HRY-269-	श्री हरेन्द्र आर्य पुत्र श्री भगत सिंह	हरियाणा	Jun-18	600
HRY 278	श्री अरविन्द काम्बोज जी	हरियाणा	Sep-20	200
HRY 281	श्रीमती रंजना अरोड़ा जी	हरियाणा	Oct-18	600
HRY 282	ष्श्री अमर नाथ गोयल मैसर्स चाननराम अमर नाथ	हरियाणा	Oct-19	400
HRY 290	श्री कुल भुषण आर्य जी	हरियाणा	Jan-18	600
HRY 291	श्री रविन्द्र आर्य जी	हरियाणा	Mar-18	600
HRY 292	श्रीमती वर्षा बतरा जी	हरियाणा	Mar-18	600
HRY 293	श्रीमती नीति मित्रा जी	हरियाणा	Mar-18	600
HRY 295	माता सत्यावति नान्दल	हरियाणा	Mar-18	600
HRY 296	श्री सत्यदेव गुप्ता जी	फरीदाबाद	Mar-18	600
HRY 297	श्री नानक चन्द्र अग्रवाल जी	फरीदाबाद	Mar-18	600
HRY 298	श्री रूप सिंह जी	हरियाणा	Mar-18	600
HRY 299	श्री ओम प्रकाश मोर जी	हरियाणा	Mar-20	200
HRY 300	श्री करतार सिंह जी	हरियाणा	Mar-18	600
HRY 301	श्री कंवल सिंह मलिक जी	हरियाणा	Mar-18	600
HRY 302	श्री पंकज काम्बोज जी	यमुनानगर	Sep-20	200
HRY-303	श्री दिनेश विद्यार्थी	हरियाणा	May-18	600
HRY-306	श्रीमती सविता देवी	हरियाणा	Jun-19	400
HRY-307	श्री कुशल पालसिंह	हरियाणा	Jun-18	600
HRY-308	श्री सन्तोष कुमारी	हरियाणा	Jun-18	600
HRY-309	श्रीमती प्रेमलता	हरियाणा	Jun-18	600
HRY-178	श्री ऋषि राम कुमार जी	हरियाणा	Jun-18	600
HRY-179	श्री ईश्वर सिंह दहिया जी	हरियाणा	Jun-18	600
HRY-310	श्री सत्यवान आर्य	हरियाणा	Jun-18	600
HRY-311	प्रधान आर्य समाज	हरियाणा	Jun-18	600
HRY-312	श्री अरूण कुमार अग्रवाल जी	हरियाणा	Aug-19	400
HRY-313	श्री रघुवीर सिंह आर्य	हरियाणा	Aug-18	600

MUNJAL SHOWA

हाई क्वालिटी शॉकर्स

TPM Certified

ISO / TS - 16949 - 2002 Certified

ISO - 14001 Certified

OHSAS - 18001 Certified

मुंजाल शोवा लिमिटेड भारत की प्रमुख शॉक एब्जॉर्बर्स बनाने वाली कंपनी है जिसकी रेंज फ्रन्ट फोर्कस, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कन्वेन्शनल) और गैस स्प्रिंगस की टू व्हीलर/फोर व्हीलर उद्योगों को उपलब्ध कराती है। कंपनी गुणवत्ता और सुरक्षा के उच्चतम मानकों के अनुरूप अपने सभी उत्पादों का निर्माण करती है। कंपनी के उत्पाद आरामदायक और सुरक्षित सवारी देते हैं और ये टिकाऊ और विश्वसनीय भी हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, QS 9000, TS–16949, ISO 14001, OHSAS 18001 और TPM प्रमाणित कंपनी है। मुंजाल शोवा के तीन मैन्युफैक्चरिंग प्लॉट हैं – गुड़गाँव, मानेसर (हरियाणा) और हरिद्वार (उत्तराखण्ड)। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है।

हमारे उत्पाद

- स्ट्रट्स/गैस स्ट्रट्स
- शॉक एब्जॉर्बर्स
- फ्रन्ट फोर्कस
- गैस स्प्रिंगस/विन्डो बैलेन्सर्स

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

Hero HONDA HONDA MARUTI SUZUKI YAMAHA

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं. 9–11, मारुति इंडस्ट्रियल एरिया
गुड़गाँव–122015, हरियाणा
दूरभाष :
0124–2341001, 4783000, 4783100
ईमेल : msladmin@munjalshowa.net
वेबसाइट : www.munjalshowa.net

MUNJAL SHOWA

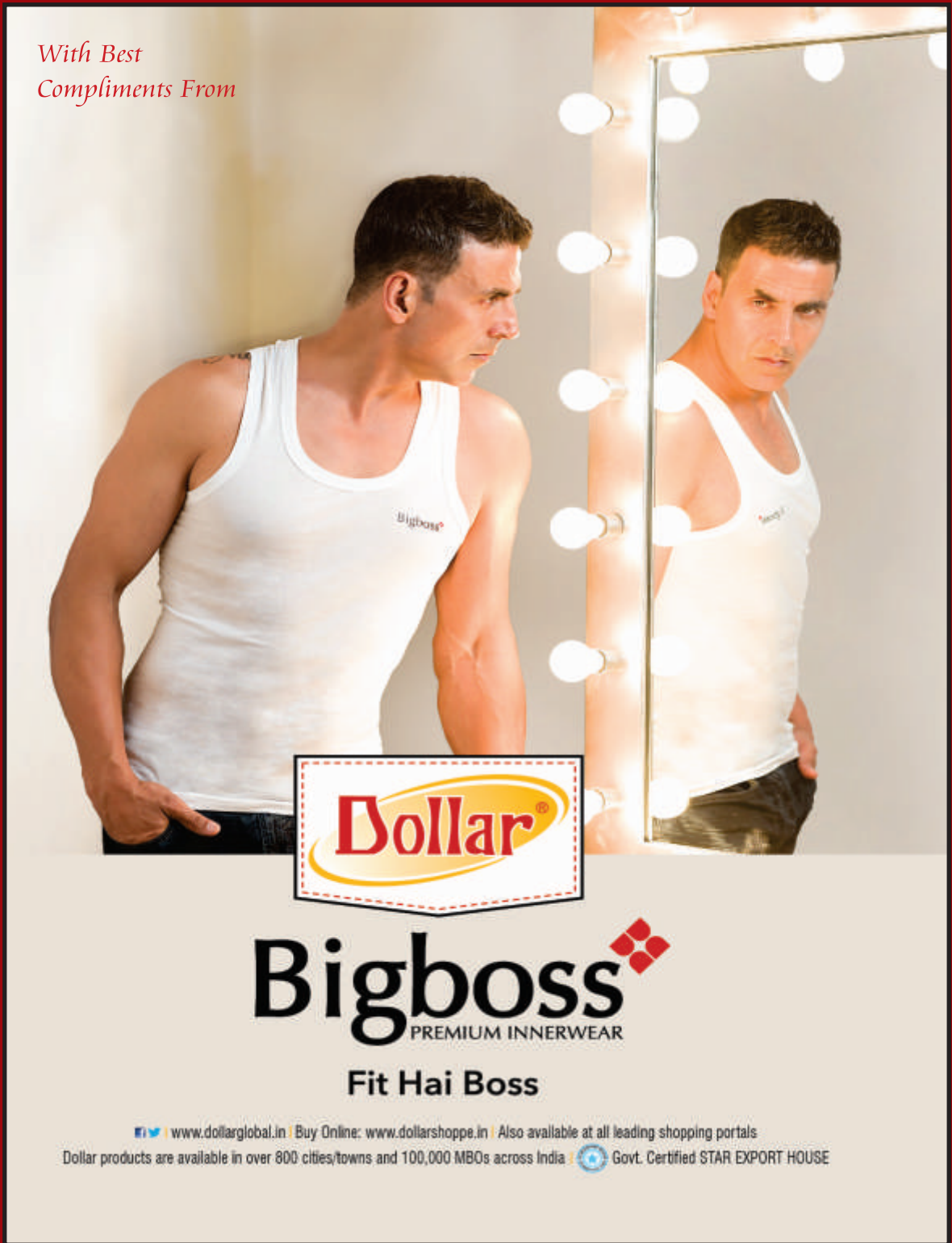

सरस्वती प्रेस, देहरादून, ई-मेल : akhilg333@gmail.com

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित।

संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री